सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

सितम्बर, 2016 | वर्ष 15 | अंक 07

ईदैन

रब ने दी ईदैन हैं खुशियां मनाने के लिए
हम्द गाने के लिए खाने पकाने के लिए
फित्र वाली ईद में खाईं सिवय्यां ख़ूब हैं
ईदे अज़हा आई है अब गोश्त खाने के लिए
अपने त्यौहारों में भी हम रहते हैं तहज़ीब में
हम नहीं पैदा हुए हैं नाच गाने के लिए
अच्छा खाते और पहनते शुक्रे रब करते हैं हम
हम नहीं खाते हैं कुछ भी नश्शः लाने के लिए
रहमतें या रब नबी पर और हों लाखों सलाम
पढ़ते इस्तिग़फ़ार हैं बख्शिश को पाने के लिए

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	इदारा	06
ईदुल अजहा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	12
कुर्बानी	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0	14
मेरी बेज़ुबान उस्तानियाँ	सय्यिदा अमतुल्लाह तस्नीम	15
मानवता का संदेश	मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	17
ईश भय पैदा करो (पद्य)	इदारा	21
शक्ति दायक मिष्ठान्न	हुसैन अहमद	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	23
सय्यिदुना इब्राहीम अलै0	फौजिया सिद्दीक़ा फाजिला	27
नदवतुल उलमा के विभाग	प्रबंधक कमेटी नदवतुल उलमा लखनऊ	33
बात प्रेम और भाईचारे की	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	37
हज़रत ख़लीलुल्लाह (पद्य)	राशिदा नूरी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुअर्नि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल हयी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- और तुम किस तरह कुफ़्र कर सकते हो जब कि तुम्हारा हाल यह है कि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़—पढ़ कर सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे बीच अल्लाह के पैग़म्बर मौजूद हैं, और जो भी अल्लाह को मजबूती से पकड़ेगा तो वह सीधे रास्ते पर पड़ गया[1](101) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से उसी तरह डरते रहो जैसे उससे डरना चाहिए और तुम को मौत न आये मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो(102) और अल्लाह की रस्सी को तुम सब मिल कर मज़बूती से थामे रहो और फूट मत डालो और अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद रखो जब तुम आपस में दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया तो उसके एहसान से तुम भाई—भाई होगए[2] और तुम जहन्नम के गढ़े के किनारे पर थे तो उसने तुम्हें उससे बचा लिया इसी तरह वह तुम्हारे लिए आयतें खोल— खोल कर बयान करता है ताकि तुम राह पर रहो(103) और तुम में एक जमात ऐसी होनी चाहिए जो अच्छाई की ओर बुलाती रहे और भलाई के लिए कहती रहे और बुराई से रोकती रहे और यही लोग सफल होने वाले हैं[3](104) और उन लोगों की तरह मत हो जाना जो निशानियां आने के बाद भी फूट डालने लगे विभेद में पड़ गये और ऐसे ही लोगों के लिए सख़्त अजाब है[4](105) जिस दिन कुछ चेहरे रौशन होंगे और कुछ काले पड़ जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) ईमान ला कर तुम काफ़िर हो गए बस अपने कुफ़्र (इनकार) के कारण अज़ाब चखो(106) और जिनके चेहरे रौशन होंगे वह अल्लाह की रहमत में जगह पाएंगे उसी में हमेशा रहेंगे (107) यह अल्लाह की वे आयतें हैं जो हम आपको ठीक—ठीक पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह जहान वालों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं चाहता(108) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह अल्लाह ही का है और अल्लाह ही की ओर सारे काम लौटाएं जाएंगे(109) तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहल—ए—किताब ईमान लाते तो उनके लिए बहुत अच्छा होता[5] उनमें कुछ तो ईमान वाले हैं मगर अधिकतर उनमें अवज्ञाकारी (नाफ़रमान) हैं(110) वे तुम को थोड़ा बहुत सताने के सिवा हरगिज़ कोई नुक़सान न पहुंचा सकेंगे और अगर वे तुम से लड़ेंगे तो तुम्हें पीठ दिखा कर भागेंगे फिर उनकी मदद न की जाएगी(111) ज़िल्लत उनके सिर थोप दी

गयी चाहे वे कहीं भी पाए जाएं सिवाय अल्लाह की रस्सी के सहारे और लोगों की रस्सी के सहारे और वे अल्लाह के गुस्से के हक़दार हो चुके और पस्ती उनके सिर मढ़ दी गई[6] इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इन्कार करते थे और पैगम्बरों की अनुचित रूप से हत्या कर डालते थे[7] यह इस कारण हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और वे सीमा लांघ जाते थे(112) हां वे सब समान नहीं, किताब वालों में एक गिरोह सीधे रास्ते पर भी है वे रात के समय अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दे करते हैं(113) अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं भलाई की ओर बुलाते हैं और बुराई से रोकते हैं और भले कामों की ओर लपकते हैं यही वे लोग हैं जिनकी गिनती नेक लोगें में है[8](114) और वे जो भी भलीई का काम करेंगे उसकी जरा सी भी नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब अवगत है(115)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. मुसलमानों को नसीहत की गई कि इन बिगाड़ करने वालों की बातों में मत आना अगर उनके इशारों पर चलोगे तो डर है कि ईमान की रौशनी से वंचित न कर दिये जाओ फिर कहा जा रहा है कि यह सम्भव कैसे है कि कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सच्चा ईमान ला कर ईमान से फिर जाए जबकि खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौजूद हैं, इस आयत के उतरने के कारण में एक घटना बयान की जाती है जिसका उल्लेख आगे है।

2. मदीने में कबीले औस व खज़रज की दुश्मनी बहुत पुरानी थी, थोड़ी–थोड़ी सी बात पर ऐसा युद्ध छिड़ जाता जो वर्षों चलता रहता, इस्लाम ने सबको एक कर दिया, दोनों कबीलों की यह एकता यहूदियों को तनिक न भाती थी, एक बार दोनों कबीलों के लोग एक सभा में एकत्र थे एक यहूदी शुमास पुत्र क़ैस वहांसे गुज़रा तो उसने फूट डालने के लिए एक उपाय की कि एक व्यक्ति को भेजा और उससे कहा कि सभा में जा कर वह शायरी सुना दो जो दोनों कबीलों की जंग के अवसर पर कही गई है, उसने शायरी सुनानी शुरु की तो पुरानी भावनाएं भड़क उठीं और फिर से जंग की बातें होने लगीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आ कर समझाया उस पर यह आयतें उतरीं, पहले इनमें यहूदियों को सम्बोधित किया गया है कि तुम्हें तो खुद ईमान लाना चाहिए था और अगर इस सौभाग्यता (खुश नसीबी) से वंचित हो तो दूसरों के लिए तो रुकावट न बनों, फिर मुसलामनों को नसीहत की गई और उन पर अल्लाह की कृपा याद दिलाई गयी है।

3. आंशिक रूप से तो यह काम हर उम्मती का है लेकिन उम्मत में एक गिरोह ऐसा ज़रूरी है जो लगातार यह काम करता रहे और उसके नियम

कानून से अवगत हो इस काम का एक बड़ा फायदा यह भी हुआ कि आपस के झगड़े इससे ख़त्म होते हैं।

4. यानी यहूदियों और ईसाईयों की तरह जो अपनी इच्छाओं के लिए बिखराव के शिकार हो गए।

5. ईमान लाते तो वे भी ख़ैरे उम्मत (उम्मत समुदाय) में शामिल हो जाते।

6. विशेष रूप से यहूदियों का उल्लेख है, अपमान जिन की किस्मत है, सैकड़ों वर्ष उन्होंने अपमान में गुज़ारे और हर जगह धित्कारे गए, "हबलुम मिनल्लाह" अल्लाह की रस्सी से मुराद इस्लाम है "हब्लुम्मिनन्नास" (लोगों की रस्सी) वह है जो हर युग में उन्होंने थामने का प्रयास किया है। यही दो रास्ते हैं जिनको अपनाकर वे अपमान से बच सकते हैं या तो वे इस्लाम स्वीकार कर लें या किसी बड़ी शक्ति का सहारा लें, इस युग में उन्होंने अमेरिका की रस्सी थाम रखी है और उसके बल बूते पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं सैकड़ों वर्ष के अपमान के बाद इतिहास में यह केवल कुछ दशकों की बाहरी चमक दमक है।

7. पैग़म्बर का क़त्ल जब भी होगा नाहक़ ही होगा, पवित्र कुर्आन ने इस बात को स्पष्ट करने के लिए इसका उल्लेख किया है कि खुद इन क़ातिलों के स्तर से भी यह क़त्ल नाहक़ व अवैध थे, तत्कालीन कानून के लिहाज़ से भी क़ानून के विपरीत और नियम के विरुद्ध थे, बनी इस्राईल की इस लगातार सरकशी (उदण्डता) का वर्णन केवल पवित्र कुर्आन ही में नहीं है बल्कि तौरेत व इंजील (बाइबिल) के पृष्ठ इससे भरे पड़े हैं, तौरेत में है "उन्होंने खुदा के पैगम्बरों का मज़ाक उड़ाया और उनकी बातों को बेहैसियत जाना और उसके नबियों की हंसी उड़ाई।"

(2 तवारीख 17:36 पुराना अहद नामा पृष्ठ/461 मुद्रित लाहौर)

बाइबिल में है "ऐ गर्दन मारने वालो! और दिल और कान के नामख़तूनों तुम हर समय रुहुल कुदुस का विरोध करते हो, जैसे तुम्हारे बाप दादा करते थे वैसे ही तुम भी करते हो, नबियों में से किस को तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया।

(आमाल 7:52,53 नया अहद नामा पृष्ठ 115)

बाइबिल में दूसरी जगह है कि तुम अपने बारे में गवाही देते हो कि तुम पैग़म्बरों के कातिलों की संतान हो। देखो मैं पैगम्बरों को तुम्हारे पास भेजता हूं उनमें से तुम कुछ को क़त्ल और फांसी दोगे और कुछ को अपनी पूजा घरों में कोड़े मारोगे और शहर–शहर सताते फिरोगे"।

(मत्ता 32–35 अहद नामा जदीद पृष्ठ 27–28 लाहौर)।

8. यहूदियों में कुछ लोग अपितु वे बहुत कम थे ईमान लाए और दोहरे बदले के हक़दार हुए, उनमें हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र सलाम प्रसिद्ध हैं जो बड़े यहूदी आलिम थे फिर इस्लाम स्वीकार कर के महान सहाबी बन गए। ◆◆

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—इदारा

हज़ से सम्बन्धितः-

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़ की बड़ी फज़ीलत बयान फरमाई है, आपने फरमाया "ऐ लोगो तुम पर हज़ फर्ज़ किया गया है तो हज़ करो। हज की अहम्मीयत को सामने रखते हुए एक शख्स ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या यह हज हर साल में फर्ज है? आपने उसका कोई जवाब नहीं दिया, उराके बाद लोगों को सम्बोधित करके कहा कि अगर मैं यह कह देता कि यह हर साल फर्ज है तो अल्लाह तआला हर साल फर्ज़ कर देता, और तुमसे यह हर साल अदा न हो सकता, इस लिए मैं जितनी बात का हुक्म दूं उस पर अमल करो और जिन बातों से रोकूं रुक जाओ बे ज़रूरत सवाल न किया करो, अगली कौमें इसकी वजह से हलाक हो चुकी हैं।

(मुस्लिम)

हज पूरी उम्र में केवल एक बार फर्ज है आपने फरमाया है कि जिस शख्स ने खालिस अल्लाह को राजी करने के लिए हज किया और हज के सफर में न तो नफ़्स की इच्छाओं पर चला और न बेशर्मी की बात की और न किसी से लड़ाई झगड़ा किया और न दूसरी कोई बुराई की तो वह हज से वापस होगा तो गुनाहों से इस तरह पाक हो चुका होगा जिस तरह बच्चा माँ के पेट से पैदा होने के वक्त होता है। (बुखारी–मुस्लिम)

इसमें कुछ भी शक नहीं है कि हज से तमाम गुनाह मुआफ हो जाते हैं मगर मुआफ़ी की जो शर्तें कुर्आन और हदीस में हज़ के सही होने और गुनाहों के मुआफ होने के लिए लगाई गई हैं उनका पूरा करना भी जरूरी है। अब जो शख्स अल्लाह को राज़ी करने के बजाए दिखावे के लिए या केवल व्यापार के लिए हज करता है वह बुराईयों से बचने के बजाए हज काल में भी वह बुराईयां करता है ऐसे शख्स का हज कैसे क़बूल हो सकता है और उसके गुनाह कैसे मुआफ हो सकते हैं? जो हज के काल में व्यापार तथा नाम कमाने ब्लेक मार्केटिंग, इस्मग्लिंग और हाजी कहलाने के लिए हज करता है उसको हज की उक्त फजीलत कैसे मिल सकती है?

जो लोग हज करने का सामर्थ रखते हैं और फिर भी हज नहीं करते उनके विषय में आपने फरमाया कि जिस शख्स के पास हज के सफर का खर्च और सवारी की सुविधा हो और वह बैतुल्लाह (काबे) तक पहुंच सकता हो फिर भी वह हज न करे तो अल्लाह के निकट तो उसके मरने और यहूदी और नसरानी हो कर मरने में कोई अंतर नहीं है, बल्कि दोनों बराबर हैं। क्योंकि अल्लाह ने फरमाया है: "लोगों पर अल्लाह का हक है कि जिसको बैतुल्लाह तक पहुंचने की सामर्थ्य प्राप्त हो, वह उस घर का

हज करे, और जिसने इनकार किया तो (इस इनकार से अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ता) अल्लाह तो सारे संसार से निर्पेक्ष है"।

(तिर्मिजी–3:97)

हज न करने को कुफ्र कहा गया। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी ज़बानी ताकीद नहीं की अपितु सन् 1 हिज्री में सहाबा की बड़ी तादाद के साथ उमरा किया और सन् 10 हिज्री में सहाबा की एक लाख से ज़ियादा तादाद के साथ हज किया इस हज को "हिज्जतुल वदाअ़" कहते हैं इसमें आपने जो प्रसिद्ध भाषण दिया उसको "खुत– बए– हिज्जतुल वदाअ़ कहते हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारतः–

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी वफात के बाद जिसने मेरी क़ब्र की जियारत की गोया उसने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। (दारकुतनी)

इस तरह की और भी कई रिवायतें हैं अगरचि यह रिवायतें सनद से कमज़ोर हैं लेकिन इतनी जियादा हैं कि उनसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत वाजिब नहीं तो वाजिब के करीब ज़रूर है।

जमहूर उलमा हज के बाद अगर कोई रुकावट न हो तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र की जियारत को जरूरी करार देते हैं।

एक हदीस का भावार्थः–

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि रख्ते सफ़र मत बांधों सिवाय तीन मस्जिदों के, मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा में) मेरी मस्जिद (मदीना मुनव्वरा में) और मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक्दिस में)। (अबू दाऊद)।

इस हदीस से कुछ लोगों ने समझा की किसी कब्र की जियारत के लिए सफर करना मना है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफर करने से रोका जाना–साबित होता है, यही अर्थ प्रसिद्ध आलिम इमाम इब्ने तैमिया रह0 भी लेते हैं। अतः उनके निकट भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र के लिए सफर करना मना है, ऐसा अर्थ लेने वाले कुछ लोग हज के दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए नहीं जाते हैं और कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद की जियारत की नीयत से मदीने का सफर करते और यहां पहुंच कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की भी जियारत करते हैं और सलाम पेश करके सवाब लेते हैं परन्तु उम्मत के दूसरे उलमा विशेष कर हनफी उलमा हदीस का अर्थ यह लेते हैं कि किसी मस्जिद की जियारत करने और उसमें नमाज़ पढ़ने की नीयत से सफर करने के सिवाए तीन मस्जिदों के मस्जिदे हराम, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद और मस्जिदे अक्सा, इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त

शेष पृष्ठ .....11...पर..

ईदुल अज़हा (बक़र ईद)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अलहम्दुलिल्लाह ईदुल अज़हा आ गई, अपने सभी प्रिय पाठकों को मुबारक बाद देता हूँ, अल्लाह करे यह ईद बराबर खुशियां लाती रहे, अल्लाह तआ़ला आपको वर्ष कें हर दिन खुशियां प्रदान करे तथा हर कष्ट हर दुख और आपदाओं से सुरक्षित रखे, आमीन।

अल्लाह तआला ने ईमान वालों को वर्ष में दो दिन खुशियां मनाने को दिये हैं, एक ईदुलफ़ित्र जो रमज़ान के रोज़ों के समापन पर मनाई जाती है, दूसरी 10 ज़िल्हिज्ज को, 10 जिल्हिज्ज को धनवान (साहिबे निसाब) मुसलमान कुर्बानी करते हैं, यद्यपि निर्धन मुसलमानों पर कुर्बानी वाजिब नही है लेकिन कुर्बानी करने वालों की ओर से उनको भी गोश्त पहुंच ही जाता है, अर्थात कुर्बानी के गोश्त से धनवान तथा निर्धन सभी लाभान्वित होते हैं, इसी लिए इस ईद को ईदुल अज़्हा अथवा कुर्बानी की ईद कहते हैं। कुछ लोग इसे ईदे कुर्बा और कुछ लोग बकरईद भी कहते हैं, निर्धनों तक कुर्बानी का गोश्त पहुंचाने की व्यवस्था शरीअ़त ने इस प्रकार की है कि कुर्बानी का तिहाई भाग निर्धनों को पहुंचाना मुस्तहब (सवाब का काम) बताया गया है। यदि कुर्बानी करने वाले इसका प्रबन्ध करें तो कोई निर्धन कुर्बानी के गोश्त से वंचित नहीं रह सकता।

निर्धन कुर्बानी करे या न करे, उस तक कुर्बानी का गोश्त पहुंचे या न पहुंचे 10 ज़िलहिज्ज उसकी भी ईद है जैसे धनवानों की ईद। वह भी 10 जिलहिज्ज को बहुत सवेरे उठता है फ़ज्र की नमाज़ में तक्बीरे तशरीक़ पढ़ता है यह तक्बीर हर व्यस्क मुसलमान के लिए 9 ज़िलहिज्ज की फ़ज्र से 13 जिलहिज्ज की अस्र तक हर फ़र्ज नमाज के सलाम फेरने के बाद कहना अनिवार्य है। मर्द इसे आवाज़ से कहते हैं औरतें आहिस्ता कहती हैं, तक्बीर के बोल यह हैं—

"अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द"

अनुवादः अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, तथा हर प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं।

तात्पर्य यह है कि निर्धन मुसलमान भी धनवान मुसलमान की भांति 10 ज़िलहिज्ज को भोर में शीघ्र उठता है फज्र की नमाज़ पढ़ता है, नहाता है, दातून करता है, अल्लाह ने जो दिये हैं अच्छे तथा स्वच्छ कपड़े पहनता है, यदि उपलब्ध है तो सुगन्ध लगाता है, ऊपर वाली तक्बीर कहते हुए ईदगाह या जहां भी ईद की नमाज़ उसे पढ़ना है, जाता है, ईद की नमाज़ अदा करता है, वापसी में सम्भव हुआ तो रास्ता बदल कर आता है, और अल्लाह ने जो दे रखा है अच्छा पकवा कर अपने बच्चों तथा परिवार के साथ खा कर खुशियां मनाता है।

धनवान लोग कुर्बानियां करने लग जाते हैं कुर्बानी के

पशु अब बहुत मंहगे हो गये हैं। मध्यम वर्ग के लोगों के लिए कुर्बानी का जानवर खरीदना कठिन हो गया है, कुर्बानी के जानवर अधिक मंहगे होने के कारण यह हैं, एक तो यह कि अब कुर्बानी करने वालों की संख्या पहले के समक्ष बहुत बढ़ चुकी है, दूसरे अब जानवरों के चरने की जगहें नहीं रह गई हैं, इसलिए लोग जानवर नहीं पालते हैं तथा उनका उत्पादन नहीं हो पाता है, मुसलमानों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कुर्बानी करने वाले धनवान (साहिबे निसाब) दो प्रकार के हैं, एक तो वह जिनकी निजी आय बहुत ज़ियादा है, वह सरकारी नौकर हैं पचास हज़ार से अधिक वेतन हैं, डॉक्टर हैं प्रतिमाह लाखों से ऊपर की कमाई है, बड़ा कारोबार है बाहर देशों में कारोबार अथवा नौकरी है, ऐसे सभी लोगों के लिए जानवरों के मंहगे होने की कोई समस्या नहीं, वह तो मंहगे से मंहगा जानवर खरीद कर कुर्बानी करते हैं, परन्तु मध्यम वर्ग के वह लोग जो मजदूरी मेहनत से या खेती बाड़ी से अपना खर्च चला लेते हैं, भूखे नंगे नहीं रहते किसी के मुहताज भी नहीं रहते किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती, परन्तु उनके घर की स्त्रियों के पास गहने हैं जो बहुत तो नहीं हैं परन्तु निसाब के कहीं अधिक हैं, ऐसे लोगों की ऊपर की कोई आय नहीं, दस बीस हज़ार रूपया एकत्र करना उनके लिए कठिन होता है, ऐसे परिवार के लोग यदि घर का एक मुखिया नियत कर लें जिस प्रकार वह घर का मालिक है, घर की औरतें गहने शौक़ से पहने परन्तु उन गहनों का मालिक घर के मुखिया को बनाए ऐसे में यदि उस परिवार के मुखिया की ओर से कुर्बानी कर दी जाय तो यह काफ़ी होगी, परन्तु यदि हर औरत अपने निसाब भर के ज़ेवर की मालिक रहेगी तो उस पर कुर्बानी वाजिब होगी इसी प्रकार यदि बेटे सम्मिलित खानदान में रहते हुए अलग अलग अपने को निसाब का मालिक बनाएंगे तो उनको भी कुर्बानी करना होगी।

आज कल कुर्बानी में विशेष कर बड़े जानवरों की कुर्बानी में कुर्बानी के जानवर की आयु की समस्या है कुछ समितियां लोगों के पैसे ले कर उनकी ओर से पड़वे खरीद कर कुर्बानी कर देती हैं, ऐसी कुछ समितियां बाजार से पड़वे खरीदती हैं बेचने वाले कह देते हैं कि पड़वे की आयु दो वर्ष है जब कि उसकी आयु दो वर्ष नही होती, यदि दो वर्ष से कम आयु के पड़वे की कुर्बानी की जाएगी तो कुर्बानी नहीं होगी। अतः कुर्बानी में हिस्सा लेने वालों को चाहिए कि जानवर अपनी आंखों से देख ले दो वर्ष आयु होने की पहचान पड़वे का दांतना है, जिसको दांतने की पहचान न हो वह किसी जानवर पालने वाले मुसलमान से उसकी पुष्टि कर ले ताकि कुर्बानी सही हो जाए। यह समस्या उस समय आती है जब पड़वा बिलकुल बच्चा दिखता है।

हनफी उलमा के निकट कुर्बानी 10 जिलहिज्ज को ईद की नमाज़ के बाद से 12 जिलहिज्ज की मग़रिब से पहले तक दुरुस्त है, जमहूर उलमा का यही मसलक हैं, लेकिन अहले हदीस हजरात किसी रिवायत की बिना पर 13 जिलहिज्ज को भी कुर्बानी करते हैं हनफी हज़रात को

उनसे झगड़ने की ज़रूरत नहीं परन्तु हनफ़ी यदि 13 को कुर्बानी करेंगे तो कुर्बानी न होगी।

कुर्बानी अल्लाह को राजी करने वाली बहुत ही महत्वपूर्ण उपासना है अतः जिसे अल्लाह तौफ़ीक दे वह इसमें कोताही न करे।

एक सज्जन एक मुसलमान से कहने लगे कि किसी का जीव मारना यह उपासना कैसे हो सकती है यहतो एक प्रकार का पाप है, इससे अच्छा तो यह है कि जो पैसे कुर्बानी का जानवर खरीदने में लगाते हैं वह किसी गरीब को दे दिये जाएं वह उनसे अपनी ज़रूरतें पूरी करे। मुसलमान युवक ने उत्तर दिया मेरे भाई, अल्लाह ने आपको जो बुद्धि दी है उसके अनुसार आपने जो सही समझा वह कंहा परन्तु इस्लाम के कार्य अपनी बुद्धि से नहीं बनाए गए हैं, अपितु सबके सब अल्लाह के आदेशानुसार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए हैं यद्यपि इस्लाम का कोई कार्य बुद्धिहीन नहीं है यह अलग बात है कि हमारी सीमित बुद्धि उसको भली भांति समझ न पाए।

ध्यान दीजिए इस संसार में जो जन्म लेता है उसका देहानत हो जाता है यह बात सत्य है या नहीं? सज्जन पुरुष ने कहा अवश्य ऐसा होता है।

मुस्लिम युवकः बहुत से लोग एक्सीडेन्ट (दुर्घटना) में मरते हैं, कितने लोग रोगों से मरते हैं, कितने का हार्ट फ़ेल हो जाता है, कोई कालरा (हैजा) से मरता है, कोई सूगर रोग में तो कोई छय रोग में कोई सांप काटने से मरता है, तो कोई पानी में डूब कर मर जाता है, कोई आग से जल कर मरता है, तो किसी को कोई हिन्सक पशु खा जाता है।

सज्जन पुरुषः हाँ हाँ यह सब होता है, ईश्वर जिसे जैसे चाहता है उसका अन्त कर देता है।

मुस्लिम युवकः अच्छा तो यह बताइए क्या ईश्वर अत्याचारी है जो लोगों की इस प्रकार जानें ले लेता है।

सज्जन पुरुषः ईश्वर को अत्याचारी नहीं कह सकते सारी सृष्टि उसने रची है, रचयता वही है निर्माता वही है वह अपनी निर्मित जानों का अन्त जैसे चाहे करे, वह अत्याचारी नहीं वह तो महा कृपालू तथा बड़ा दयालु है यदि वह किसी को मौत न दे तो सोचो क्या हो?

मुस्लिम युवकः ईश्वर ने बहुत से जीव जन्तु ऐसे बनाए हैं जिनका आहार दूसरे जीवों तथा पशुओं का मांस है कुछ को मरे हुए पशुओं का मांस तो कुछ को जीवित पशु पक्षियों का मांस जैसे बाज़ पक्षियों में, भेड़िया बाघ चीता, तेन्दुआ, हिन्सक जन्तुओं में यह हिन्सक जन्तु दूसरे जीव को मार कर खाएं या अपनी जान गवाएं आप इस विषय में क्या कहते हैं?

सज्जन पुरुषः मैं तो यही कहूंगा कि ईश्वर की मरजी, जिसे जैसे चाहा निर्मित किया यह सब उसकी माया है हमको ईश्वरीय कर्मों पर आपत्ति करने का अधिकार नहीं।

मुस्लिम युवकः मेरे भाई इसी प्रकार मनुष्य को ईश्वर ने ऐसी सृष्टि बनाया है जो अनाज भी खाता है और पशुओं का मांस भी खाता है, यदि संसार में मांस खाना रोक दिया जाए तो बड़ी ही कठिनाई का सामना हो, अलबत्ता हम मुसलमान अपनी बुद्धि से किसी पशु का मांस नहीं खाते, अपितु ईशादेश से उसके

नियमों के अनुसार खाते हैं इसी पर कुर्बानी के सवाब को समझ लीजिए, अल्लाह (ईश्वर) ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा आदेश दिया कि धनवान कुर्बानी करे अतः यह उपासना है और इस पर सवाब है, यदि वह कुर्बानी न करें तो पापी होंगे।

सज्जन पुरुषः मेरे भाई मैं समझ गया आप मुझे ईश्वर का वह आदेश बताइये जिसमें गोश्त खाने तथा कुर्बानी करने का उल्लेख है, ताकि मैं अपने दूसरे लोगों को बता सकूं कि मुसलमान ईशादेश से कुर्बानी करते तथा ज़ब्ह करके कुछ विशेष पशुओं का मांस खाते हैं।

मुस्लिम युवकः

पवित्र कुर्आन में आया हैः-

"अतः जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अर्थात जिस हलाल जानवर को अल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह किया गया हो, उसे खाओ, यदि तुम उसकी आयतों को मानते हो"। (सूरः अनआमः118)

क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीजों में से चौपाये पैदा किये और अब वे उनके मालिक हैं। और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उनमें से कुछ तो उनकी सवारियां हैं और उनमें से कुछ को वे खाते हैं। (यासीनः71,72)

यह तो गोश्त खाने का सुबूत है। कुर्बानी का सुबूत सुनियेः

"और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में (अर्थात 10 जिलहिज्ज से 12 जिलहिज्ज तक) उन चौपाए अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें (अर्थात कुर्बानी करें) जो उसने उन्हें दिये हैं। फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ"। (अल हज्जः28)

"कुर्बानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में से बनाया है। तुम्हारे लिए उनमें भलाई है। अतः खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। (अर्थात नहर करो) फिर जब उनके पहलू भूमि से आ लगें तो उनमें से स्वयं भी खाओ और संतोष से बैठने वालों को भी खिलाओ और मांगने वालों को भी। ऐसा ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया है, ताकि तुम कृतज्ञता दिखाओ"। (अलहज्जः36)

❖❖❖

प्यारे नबी की .....

किसी और मस्जिद के लिए सफ़र करने से रोका जाना समझा जाएगा, अगर इन तीन मस्जिदों के अतिरिक्त बिल्कुल सफ़र से रोका जाना समझा जाएगा तो न तिजारत के लिए सफ़र करना दुरुस्त होगा न इल्म हासिल करने के लिए न नौकरी के लिए और यह मतलब किसी के निकट सही नहीं है।

अतः इस हदीस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक क़ब्र की जियारत (दर्शन) के लिए सफ़र करने से मना साबित नहीं होता, बल्कि दूसरी हदीसों के अनुसार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की जियारत के लिए सफ़र करना सवाब का काम है।

अरबी जानने वाले ध्यान दें:-

जब मुस्तस्ना मिन्हु महजूफ हो तो आमतौर से मुस्तस्ना की जिंस से समझा जाता है, इस हदीस में मुस्तस्ना मिन्हु महजूफ़ है और मुस्तस्ना मसाजिद है इसलिए मुस्तस्ना मिन्हु मस्जिद लेना चाहिए।

❖❖❖

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनु0 मु0 हसन अंसारी

जहां तक अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तअ़ल्लुक़ है इस पहलू पर और ज़ियादा ज़ोर देने की ज़रूरत है। आप की ज़ात के साथ सिर्फ़ ज़ाब्ता और कानून का तअल्लुक़ क़ाफी नहीं, बल्कि ऐसा रूहानी और जज़बाती तअल्लुक़ मतलूब है जो जान व माल से बढ़ कर हो। सही हदीस में आया है:—

"उस वक़्त तक तुम में से कोई मोमिन नहीं होगा, जब तक मैं उसको अपनी औलाद, माँ—बाप और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊँ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

दूसरी हदीस में है:—

"तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन न होगा जब तक मैं उसे अपनी ज़ात से ज़ियादा अज़ीज़ व महबूब न हूँ।" (मुसनद अहमद)

इस सिलसिले में उन तमाम बातों से बचने की ज़रूरत है, जो इस तअल्लुक़ व महब्बत के स्रोतों को खुश्क या कमज़ोर करते हैं। सूरः अहज़ाब, सूरः हुजरात और सूरः फ़तेह को ग़ौर से पढ़ने, तशहुद व नमाज़ में दुरूद व सलात की शमूलियत पर ग़ौर, कुर्आन में दुरूद की तरग़ीब और दुरूद की फ़ज़ीलत में कसरत से वारिद होने वाली अहादीस को ग़ौर से पढ़ने से पता चलता है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के बारे में एक मुसलमान से उससे कुछ ज़ियादा मतलूब है जिसको सिर्फ़ क़ानूनी और जाब्ते का तअल्लुक कहा जाता है। इसके लिए वह तअल्लुक़ मतलूब है जिसके सोते दिल की गहराईयों से फूटते हैं। इसे कुर्आन में "ताज़ीर" व "तौक़ीर" के लफ़्ज़ से अदा किया है:—

तर्जुमाः—*"उसकी मदद करो और उसको बुज़ुर्ग समझो"। (सूरः फ़तेह—9)*

इसकी रौशन मिसालें ग़ज़व—ए—रज़ीअ इब्न—अल—दुस्ना के वाक़िया, ग़ज़व—ए—ओहद के मौक़े पर अबूदुजाना और हज़रत तल्हा के तर्ज़े अमल, इसी ग़ज़वे में बनी दीनार की मुसलमान ख़ातून के जवाब, सुलह हुदैबिया के मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ सहाबा किराम की वालेहाना (प्रसाढ़) महब्बत और अदब व एहतराम में देखी जा सकती है जिनकी बिना पर अबूसुफ़ियान (जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) की ज़बान से बेसाख़्ता निकला कि "मैंने किसी को किसी से इस तरह महब्बत करते नहीं देखा, जिस तरह मुहम्मद सल्ल0 के साथी मुहम्मद सल्ल0 से करते हैं।" और कुरैश के क़ासिद उरवा बिन मसऊद सक़फ़ी ने कहा कि "ख़ुदा की क़सम मैंने किस्रा व क़ैसर के दरबार भी देखे हैं, मैंने किसी बादशाह की ऐसी इज़्ज़त होते हुए नहीं देखी जिस तरह मुहम्मद सल्ल0 के साथी मुहम्मद सल्ल0 की इज़्ज़त करते हैं।

इस पाक महब्बत के बग़ैर जो शरअी अहकाम व आदाब के ताबे उसवये सहाबा रज़ि0 के इत्तेबा के साथ हो, उसवये रसूल की कामिल पैरवी और शरीअत की मज़बूत पकड़ मुमकिन नहीं। मुसलमान जो कभी ख़ुदा और रसूल के इश्क़ की बदौलत दुन्या में सुर्ख़रू थे, इसके बग़ैर सर्द राख का ढेर बने हुए हैं:–

बुझी इश्क़ की आग अन्धेर है।
मुसलमाँ नहीं ख़ाक का ढेर है।।

दीन की सातवीं खुसूसियत उसकी कामिलियत और दवाम (स्थायित्व) है क्योंकि यह एलान कर दिया गया है कि अक़ायद व शरीअत की मुकम्मल तालीम दी जा चुकी। इरशाद होता है:–

तर्जुमा:– *''मुहम्मद सल्ल0 तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा के पैग़म्बर और ख़ातमुन नबीयीन हैं, और ख़ुदा हर चीज़ से वाकिफ़ है।'' (सूरः अहज़ाब–40)*

और कुर्आन में साफ़–साफ़ कह दिया:–

तर्जुमा:–*''आज हमने तुम्हारे लिए दीन कामिल कर दिया, और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।'' (सूरः मायदा–3)*

यह आयत अरफ़ात के दिन हज्जतुलविदा के मौक़े पर सन् 10 हिज्री में नाज़िल हुई। बाज़ ज़हीन यहूदी आलिम जो क़दीम मज़ाहिब की तारीख़ से वाकिफ़ थे, भांप गये कि यह वह एजाज़ (सम्मान) है जो तनहा मुसलमानों को दिया गया है। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि0 से कहा कि ऐ अमीरुलमोमिनीन आप अपनी किताब में एक ऐसी आयत की तिलावत करते हैं जो अगर हम यहूदियों पर नाज़िल होती तो हम उस दिन ईद मनाते।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद नबूवत का इख़्तेताम इन्सानियत का एजाज़ और उनके साथ रहमत व शफ़क़त का नतीजा था, और इसका एलान था कि अब इन्सानियत पुख़्तगी और कमाल के मरहले को पहुंच गई, और नबूवत के सिलसिले के ख़ात्मा से इन्सानी सलाहियतें इस ख़तरे से महफ़ूज़ हो गई कि थोड़े समय के बाद एक नबी की दावत का जुहूर हो और समाज अपने सारे मसायल से हट कर इसकी हक़ीक़त मालूम करने और उसकी तसदीक़ करने में लग जाये। इस तरह महदूद इन्सानी ताक़त को रोज़–रोज़ की आज़माईश से बचा लिया गया। और नस्ले इन्सानी को बार–बार आसमान की तरफ़ निगाह उठाने के बजाय अपनी सलाहियतों के इस्तेमाल के लिए इस ज़मीन पर ध्यान देने की दावत दी गई।

इस अक़ीदा ही की बुन्याद पर यह उम्मत ख़तरनाक साज़िशों का मुक़ाबला कर सकी। इसका अपना एक रूहानी मरक़ज और इल्मी सरचश्मा है जिससे उसका गहरा तअल्लुक़ है। इसकी बुन्याद पर इस ज़माने में मुसलमानों में एकता क़ायम हो सकती है। इससे ज़िम्मेदारी का एहसास उभरता है और समाज में इससे फ़साद को रोकने और

शेष पृष्ठ .....22...पर..

कुर्बानी (बलिदान)

—मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0

हज की तरह ईदुल अजहा की कुर्बानी भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उस कुर्बानी की यादगार है जो उन्होंने अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के गले पर छुरी फेर कर काइम की थी। हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "कुर्बानी तुम्हारे पितामा इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यादगार है" पवित्र कुर्आन में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी का विस्तार से वर्णन है, पवित्र कुर्आन में है कि अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बुढ़ापे में जो पहली सन्तान दी थी वह हज़रत "इस्माईल" थे, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जो यद्यपि समझदार हो गये थे परन्तु अभी अव्यस्क थे कि एक दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने स्वप्न देखा कि वह अपनी इक्लौती सन्तान को खुदा की राह में कुर्बान कर रहे हैं, नबियों का ख्वाब चूंकि सच्चा होता है इसलिए उन्होंने इसको इशा —रए—गैबी (परोक्ष संकेत) समझा और बेटे से कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि मैं तुमको अपने हाथों से कुर्बान (ज़ब्ह) कर रहा हूं, तुम्हारी क्या राय है, हज़रत इस्माईल यद्यपि बच्चे थे परन्तु अल्लाह ने बचपन ही से उनके हृदय में नुबूवत का प्रकाश डाल रखा था। अतः एक आज्ञाकारी पुत्र के समान बाप से कहा कि मेरे पिता आपको जो अल्लाह का आदेश मिला है उसको पूरा कीजिए इन्शाअल्लाह आप मुझको धैर्यवान पाएंगे, मैं अल्लाह की राह में कुर्बान होने में कोई घबराहट नहीं पाता हूं। अतएव दोनों महापुरुषों ने अल्लाह के आदेश के आगे सर झुका दिया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़ब्ह करने के लिए करवट लिटा दिया, करवट इसलिए लिटाया कि बाप की

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

निगाह बेटे के मुख पर न पड़े, हो सकता है कि बाप का प्रेम रुकावट डाले और छुरी रुक जाये, अल्लाह को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की जान नहीं लेना थी अपितु हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ईमान की परीक्षा लेना थी और उस ईमानी भावना की परीक्षा लेना थी जिसकी बिना पर आदमी अपनी अति प्रिय वस्तु को कुर्बान करने से पीछे नहीं हटता, अतएव जब उनके ईमान की सच्चाई का प्रमाण मिल गया तो अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को आदेश दिया कि जन्नत से एक दुम्बा ले जाओ और इब्राहीम से, इस्माईल की जगह पर दुम्बा जब्ह कराओ और ऐसा ही हुआ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुम्बा जब्ह किया रिवायत में आता है कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने आँख पर पट्टी बांधे हुए छुरी चला रहे थे तो हज़रत

शेष पृष्ठ .....20...पर..

—औरतों के लिए

मेरी बे जुबान उस्तानियाँ

(मेरी बिन बोल की अध्यापिकाएँ

—सय्यिदा अमतुल्लाह तस्नीम (रह0)

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

प्रारम्भिक शिक्षा मैं ने अपने आदरणीय चचा मौलवी सय्यिद अ़ज़ीज़ुर्रहमान साहिब से पाई, चचा जान ने बड़ी ममता तथा प्रेम से मुझे शिक्षा दी और आचरण की बातें सिखाईं, उठने, बैठने और बात चीत का सलीक़ा अदब और काइदा बहुत कुछ उन्होंने सिखाया साथ ही साथ सीने, पिरोने, काढ़ने तथा खाना पकाना सीखने पर प्रेरित करते रहे और साहस बढ़ाते रहे। कलाम मजीद, उर्दू तथा फ़ारसी में आमद नामा, गुलजारे दबिस्तां, रुकआते आ़लम़ गीरी भी पढ़ी रुकआते आलम गीरी के ग्यारह सबक हुए थे कि मेरी बड़ी बहन की शादी की बात का सिलसिला शुरु हो गया और मेरी तालीम का सिलसिला बन्द हो गया। अब मैं स्वयं पुस्तकों का अध्ययन करने लगी, सबसे पहले मैंने अपने पिता हकीम सय्यिद अब्दुलहयी की लिखी पुस्तकों में से तालीमुल इस्लाम, नूरुल ईमान, इस्लाह और इस्तिफादा पढ़ीं, उन किताबों का मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा उनमें से याद कर लेने वाली बातें मसअले आदि मैंने कंठष्थ कर लिये उन किताबों की दीनी और भले आचरणों की बातों का मुझ पर अच्छा प्रभाव पड़ा और मैंने उनको स्वीकार करने तथा अपनाने का भरपूर प्रयास किया। नूरुल ईमान से ईमान तथा विश्वास में दृढ़ता आई।

मेरी माता उन पर अल्लाह की कृपा तथा दया हो और मुझ को उनकी सेवा का हक अदा करने का सामर्थ्य दे, (यह लेख लिखते समय दोनों जीवित थीं) वह दिन भर घरेलू कामों तथा पिता जी के आज्ञा पालन में लगी रहतीं, वह रातों को हम लोगों को नमाज़ सिखातीं, कलाम मजीद की छोटी—छोटी सूरतें याद करातीं, अल्लाह और रसूल की बातें सुनातीं रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी की बातें और सहा—बए—किराम और सहाबियात रज़ि0 की सीख प्रद घटनायें सुनातीं, बुजुर्गों की सच्ची कहानियां सुनातीं, साथ ही सदाचरण अपनाने पर प्रेरित करतीं, बुराइयों के दुष्प्रभाव बतातीं और ऐसे प्रभावकारी विधि से समझातीं की उनकी बातें मन में बैठ जातीं यह उनका प्रति दिन का नियम था।

मेरी माता कुर्आन की हाफिजा हैं मुझे भी कुर्आन कंठष्थ करने पर प्रेरित किया फिर कुछ दिनों बाद कुछ सोच कर रोक दिया जब कि मैं सूरतुल बकरा याद कर चुकी थी, फिर उन्हीं के आदेश और अपने शौक से निम्नलिखित सूरतें जबानी याद कीं: यासीन, अर्रहमान, अलमुल्क, अलकि़यामः, अद्दुखान, अलफ़त्ह, अन्नबा, अलमुज़्ज़मिल, अलजुमुअः

और अलबकरा तो पहले ही याद कर ली थी यह सूरतें अब भी मुझे याद हैं, उस ज़माने में डिप्टी नजीर अहमद की किताबों की बड़ी क़द्र थी, हर घर में उनकी किताबें पढ़ी जाती थीं, मैने भी उनकी मिरआतुल अरूस, बनातुन्नअ़श और तौबतुन्नसूह पढ़ीं, बनातुन्नअ़श, से जुग़राफिया का शौक हुआ, हिसाब सीखने का एहसास (आभास) हुआ, अतएव कुछ हिसाब सीख भी लिया, तौबतुन्नसूह में नसूह के स्वप्न से बड़ी शिक्षा मिली और दीन से लगाव बढ़ गया, मिरआतुल अ़रूस से बहुत कुछ प्राप्त हुआ, यद्यपि मेरी आयु बहुत कम थी, परन्तु बड़ी बड़ी बातें सीखने की भावना प्राकृतिक थी।

"असगरी" के हालात पढ़ क़र जी चाहा कि मैं भी वैसी ही बन जाऊँ, अतएव घरेलू कामों को सीखने सीने, पिरोने, खाने पकाने, बच्चियों को पढ़ाने की भावना इस पुस्तक "तौबतुन्नसूह" से पैदा हुई, चुनांचि कई लड़कियों को पढ़ने के लिए बिठा लिया, धीरे–धीरे पूरा मकतब (पाठशाला) स्थापित हो गया और कई लड़कियों ने निर्धारित शिक्षा पूरी की, पढ़ाने से मुझको स्वयं बड़ा लाभ प्राप्त हुआ और जो घरेलू कामों का गुर प्राप्त हुआ वह इसी पुस्तक द्वारा प्राप्त हुआ, फिर अल्लामा राशिदुल खैरी की पुस्तकें, सुब्हे जिन्दगी, शामे ज़िन्दगी, शबे जिन्दगी, नौ–हए–ज़िन्दगी, मनाजिलुस्साइरः पढ़ीं, उनमें से सब से अधिक "शामे ज़िन्दगी" का मुझ पर प्रभाव पड़ा। आने वाली ज़िन्दगी में इस पुस्तक ने बड़ा पथ प्रदर्शन किया, फिर नज़्रे सज्जाद साहिबा और मुहम्मदी बेगम साहिबा की लिखी पुस्तकें पढ़ीं, उन किताबों में लिखे लेख "आज कल" "चन्दन हार" और "बद मिजाज दुल्हन" से बहुत नसीहत प्राप्त हुई, आज का काम कल पर डालने की मेरी भी आदत थी, वह इसी पुस्तक के पढ़ने से छूटी।

मेरे खालू आनरेरी मजिस्ट्रेट मौलवी सय्यिद खलीलुद्दीन मरहूम ने बहुत सी मजहबी किताबें मंगवाई जिनमें उस–वए–सहाबा, उस–वए–हसना, सीरतुस्सहाबियात, बन्दगी आदि थीं, खालू जी ने वह किताबें मुझे भी पढ़ने को दीं, मैंने उन्हें बड़ी रुचि तथा ध्यान से पढ़ा, सहा–बए–किराम और सहाबियात रज़ि0 के सदाचरण तथा स्वभावों का ऐसा असर पड़ा कि उनका अनुकरण करने के लिए मैं बेचैन हो गई, फिर काजी सुलैमान की रहमतुल्लिल आलमीन भाग 1,2 और मौलाना सय्यिद सुलैमान नदवी की रहमते आलम और सीरते आइशा पढ़ीं, सीरते आइशा पढ़ने से, अरबी से रुचि तथा आलिमा बनने की भावना पैदा हुई, उस समय मेरे खान्दान में, औरतों में केवल पवित्र कुर्आन तथा मसअले मसाइल की किताबें पढ़ाई जाती थीं, अतएव मैंने अपने छोटे भाई अबुल हसन अली से चुपके चुपके अरबी पढ़ना आरम्भ कर दिया, वह उस समय अरबी के विद्यार्थी थे जो स्वयं पढ़ते मुझे भी पढ़ा देते धीरे धीरे मैंने भी अरबी की कई किताबें पढ़ लीं, यद्यपि मैं आलिमा न बन सकी, परन्तु अरबी की ऐसी योग्यता प्राप्त हो गई कि हदीस की प्रसिद्ध

शेष पृष्ठ .....25...पर..

(एक लेख से ग्रहीत)

मानवता का संदेश

—मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

यदि हम को इस देश में सत्य के प्रचार का कार्य करना है तो मानवता का शीर्षक ऐसा कुशल बिन्दु है जिसके द्वारा हम वहां तक पहुंच सकते हैं जहां तक पहुंचना किसी और मार्ग से सरल नहीं, इसको साधन बना कर हम अपने देश के दूसरे भाईयों के मन मस्तिष्क में उतर सकते हैं, तथा मानवता द्वारा हम वह कुछ कर सकते हैं जिसका करना हमारे लिए सरल नहीं हो सकता है।

आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 (जिनको लोग अली मियाँ के नाम से जानते हैं) ने मानवता का संदेश आन्दोलन चलाया था उस समय बहुत से लोग यह समझ रहे थे कि कहीं यह आन्दोलन "सर्व धर्म एकता" का कारण न बन जाये। अतः कुछ लोगों ने मौलाना से इस विषय में प्रश्न भी किया तो मौलाना ने उत्तर दिया कि यह सर्व धर्म एकता का नहीं "मानव एकता" का आन्दोलन है। हमारा मानना है कि इस्लाम ही सत्य धर्म है परन्तु इस्लाम मानव जाति के प्रति सहानुभूति की शिक्षा देता है, तथा मानवता को एकता की लड़ी में पिरोता है, अगर मानव एकता बाकी रहेगी तथा समाज में शान्ति स्थापित रहेगी तो दीन का काम भी सरल रहेगा।

हज़रत मौलाना ने इलाहाबाद से मानवता का संदेश आन्दोलन आरंभ किया था फिर यह आन्दोलन पूरे देश में फैल गया पूरे देश में दौरे हुए बड़े—बड़े सम्मेलन हुए, डाईलाग की गोष्ठियाँ हुईं, देश के दूसरे धर्म के महत्वपूर्ण सज्जनों को जोड़ा गया उनके समक्ष मानवता की बात रखी गई। और यह कहा गया कि हम सब इस देश के निवासी हैं हमारे लिए अनिवार्य है कि हम सब मिल जुल कर रहें एक दूसरे के सहयोगी तथा हितैषी रहें यदि हममें शैतान ने फूट

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

डाल दी और हममें परस्पर दूरी पैदा हो गई तो यह किसी एक समाज एक यूनिटी, एक धर्म की हानि न होगी अपितु पूरे देश की हानि होगी, पूरे देश में अव्यवस्था का भय पैदा हो जायेगा अतः हम सबको चाहिए कि जहां भी फूट पैदा हो, जहां भी परस्पर दूरी होने लगे तुरन्त उसका समाधान करें और वहां मानवता की शिक्षा का प्रचार करके प्रेम भाव पैदा करें, ताकि हम सब शान्ति के वातावरण में सांस ले सकें। हज़रत मौलाना ने यह बातें जगह जगह कहीं और उसके अच्छे परिणाम निकले इस प्रकार मानवता के संदेश का कार्य देश में चल पड़ा।

हज़रत मौलाना के देहान्त के पश्चात मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 ने इस काम को संभाला, उन्होंने प्रयास किया कि यह कार्य सम्मेलनों, गोष्ठियों लेखों से आगे बढ़ कर व्यवहार में आये और मुसलमान अपने स्वभाव से दूसरे भाईयों में

अपनी उपयोगिता सिद्ध करें और वतनी भाईयों में जो मुसलमानों के विरुद्ध झूठी बातें फैला दी गई हैं उनको दूर करें। इस्लाम की शिक्षा है कि मानव जाति के साथ सहानुभूति हो एक दूसरे के दुख दर्द में सहयोग हो, मानव ही क्या इस्लाम हर जीव पर दया की शिक्षा देता है। यदि हम व्यवहारिक रूप से इस्लाम की शिक्षाओं को अपनाएं और फैलाएं तो हालात में बड़ा परिवर्तन आ जाये। अल्लाह का शुक्र है कि इस तौर पर काम की कोशिश की गई तो उसके अच्छे परिणाम सामने आए।

आज कल के हालात से घबराना न चाहिए पिछली शताब्दियों में इससे खराब हालात आ चुके हैं परन्तु अल्लाह की मदद आई और हालात ठीक हो गये एक समय में बगदाद में तातारियों के आक्रमण से ऐसे हालात पैदा हो गये थे कि लगता था कि इस्लाम का दिया बुझ जायेगा परन्तु अल्लाह की मदद आई, अल्लाह का फैसला है कि वह इस्लाम को कियामत तक सुरक्षित रखेगा अतः जो इस्लाम को अपनाएगा और समाज में इस्लामी शिक्षाओं को अपने व्यवहार से फैलायेगा अल्लाह उसकी मदद करेगा। और जहां भी और जिस समाज में भी मुसलमान इस्लाम पर जमे रहे और इस्लामिक आचरण से लोगों को प्रभावित करते रहे वहां के लोगों पर अल्लाह की मदद तथा सुरक्षा उतरती रही और मुसलमान अपने इस्लामिक रूप के साथ सुरक्षित रहे। किताब व सुन्नत में जो शिक्षायें दी गई हैं उनको अपना कर और फैला कर खुद भी सुख शांति से रह सकते हैं तथा देश को भी सुख शांति दे सकते हैं।

देश की विद्यमान दशा में व्यवहारिक रूप से मानवता संदेश का काम चलना अति आवश्यक है इस कार्य से देश के हालात बदल सकते हैं, मुसलमानों को चाहिए कि वह वतनी भाइयों से मिलें उनसे प्रेम और महब्बत की बातें करें उनको बतायें कि इस्लाम अम्न तथा शांति का प्रचारक है वह उपद्रव, आतंकवाद तथा रक्त पात को महा पाप बताता है, इस्लाम न्याय तथा सद्व्यवहार की शिक्षा देता है।

सीरतुन्नबी (नबी की जीवनी) में "हिलफुल फुजूल" (एक प्रसिद्ध सन्धि) का उल्लेख मिलता है जो मक्का मुकर्रमा में हुआ था, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उसमें शरीक थे, इस संधि में तय पाया था कि हम सब निर्बलों की सहायता करेंगे अत्याचारियों को अत्याचार से रोकेंगे विधवाओं तथा पीड़ितों की मदद करेंगे, इससे ज्ञात हुआ कि मानवता का संदेश, हिलफुलफुजूल का एक व्यवहारिक रूप है, इसका महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद मदीने में फरमाया कि मैं मक्का मुकर्रमा में हिलफुलफुजूल संधि में शरीक हुआ था उस जैसी संधि के लिए आज भी कोई मुझे अह्वान करे (दावत दे) तो मैं उसमें शरीक होने के लिए तैयार हूं, आप इससे मानवता का संदेश आन्दोलन का महत्व तथा उसकी आवश्यकता को समझ सकते हैं।

मानवता का संदेश आन्दोलन वास्तव में अपने वतनी भाइयों में इस्लामिक सदाचरणों और इस्लामिक सद्व्यवहारों का परिचय देना तथा प्रसारण करना है, यह हमारी बड़ी कोताही रही है कि हम मिश्रित समाज में इस्लामिक आचरणों का परिचय भली भांति न करा सके, हमको चाहिए कि जब हम बाजारों में हों या सड़कों पर हों, आफिसों में हों या कारोबार में हों तो हर स्थान पर इस्लामिक व्यवहार परस्तुत करें। हमको चाहिए कि हम अपने सद्व्यवहार द्वारा वतनी भाइयों के दिलों में उतरें और उनके दिलों में अपना स्थान बनायें वह हम को अपना विरोधी नहीं हितैषी समझें। यह काम केवल भाषणों लिट्रेचरों तथा गोष्ठियों से न हो पायेगा आवश्यक होगा कि हम व्यवहार से भी इस्लामिक आचरण परस्तुत करें।

हमसे कोताहियां हुई हैं जब ही यह हालात आये हैं यदि हम इस मिश्रित समाज में अपने व्यवहार से अपनी योग्यता तथा आवश्यकता सिद्ध किये होते तो विद्यमान परिस्थिति सामने न आती अब हमारे लिए आवश्यक है कि 'मानवता का संदेश' द्वारा विद्यमान परिस्थिति को बदलें और परसपर प्रेम भाव पैदा करें।

हम देखते हैं कि यूरोप के लोगों ने अपने अत्याचार के साथ विश्व में अपना स्थान बना रखा है उन्होंने अपने आविष्कारों द्वारा अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रखी है आज उनके बनाये हुए लॉउड स्पीकर, बिजली के पंखे, बल्ब, ट्युब्लाइट आदि न जाने कितनी वस्तुएं इन्सानों के काम आ रही हैं।

वास्तविकता यह है कि उन्होंने अपनी टेक्नालोजी तथा आविष्कारों द्वारा विश्व से अपना लोहा मनवा रखा है अन्यथा उनका अत्याचार उनकी अश्लीलता और उनके बुरे आचरण उनके विनाश के लिए पर्याप्त थे।

जब तक मुसलमान दुन्या के लोगों में अपनी उपयोगिता तथा लाभदायकता सिद्ध करते रहे दुन्या पर छाये रहे आज भी हम अपने आचरणों द्वारा विश्व में अपना स्थान पा सकते हैं लाचार विधवा की सेवा करें अनाथ बच्चों की मदद करें पड़ोसियों को दुखी देख कर दुख प्रकट करें उनको ढ़ारस दें पड़ोसी के खुशी में खुशी के साथ उसका साथ दें रोगी के पास जायें उससे ऐसी बातें बिल्कुल न करें जिनसे वह निराश हो अपितु ऐसे वाक्य बोलें जिनसे रोगी आशावान हो। यह सब मानवता के संदेश के कार्य हैं, निःसन्देह यूरोप के अत्याचारियों ने अपने भौतिक आविष्कारों द्वारा विश्व के बाजार में अपना स्थान बना रखा है परन्तु यदि हम चाहें तो इस्लामी सदाचरणों द्वारा अपने वतनी भाइयों के दिलों में अपना स्थान बना सकते हैं।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुममें सबसे भला व्यक्ति वह है जो लोगों को लाभ पहुंचाये।

(शअबुल ईमानः 7658)

हदीस में आता है कि सही मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से सब लोग सुरक्षित रहें।

इससे मालूम हुआ कि समाज में सुधार केवल बात से संभव नहीं सद्व्यवहार चाहिए। हम अपनी बातों से नहीं व्यवहार से सिद्ध करें कि चोरी करना पाप है, डकैती पाप है, रक्तपात पाप है आतंक फैलाना पाप है, घूस लेना पाप है, झूठ बोलना पाप है, जुआ खेलना पाप है किसी को सताना पाप है। व्यभिचार तो बहुत दूर की बात है किसी की बहू बेटी की सुन्दरता को घूरना भी महा पाप है किसी की पीठ पीछे बुराई करना पाप है, चुगली खाना पाप है, आप बतायें कि यदि इन जैसे तमाम पापों से कोई मुसलमान दूर रहे और न्याय से काम ले, लोगों के साथ भला व्यवहार करे, लोगों के काम आये तो क्या उस मुसलमान से कोई भी मनुष्य घृणा करेगा कदापि नहीं अतः हमको चाहिए कि हम मानवता के संदेश द्वारा यह स्थान प्राप्त करें और देश में शांति स्थापित करें।

❖❖❖

कुर्बानी .....

जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को हटा कर दुम्बा लिटा दिया वही जब्ह हुआ हज़रत इब्राहीम ने जब आँख की पट्टी खोली तो दुम्बा जब्ह देखा और हज़रत इस्माईल अलग खड़े थे (वास्तविक बात अल्लाह अधिक जानता है) पवित्र कुर्आन में इस परीक्षा को बहुत बड़ी परीक्षा कहा गया है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुर्बानी द्वारा हम को यह शिक्षा दी गई है कि यदि अल्लाह का आदेश हो तो उसके आज्ञा पालन की यह मांग है कि हम अपनी अत्यंत प्रिय वस्तु को भी अल्लाह की राह में कुर्बान करने से न हिचकिचाएं। पवित्र कुर्आन में है कि "मुसलमानों तुम से जो जानवर की कुर्बानी कराई जाती है तो उस जानवर का खून और गोश्त अल्लाह को नहीं पहुंचता अपितु अल्लाह को तुम्हारे दिल का तक्वा पहुंचता है, अर्थात तुम को कुर्बानी का सवाब उस भावना पर मिलेगा जिस भावना से तुमने कुर्बानी की, यदि उस कुर्बानी से अल्लाह का आज्ञा पालन अभीष्ट होगा तो उसका प्रतिफल मिलेगा परन्तु यदि दिखावे के लिए कुर्बानी की गई होगी तो उसका बदला न मिलेगा।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुर्बानी के दिनों में धनवान मुसलमानों को कुर्बानी करने का आदेश दिया और उस का बड़ा महत्व बताया और बताया कि आज के दिन (कुर्बानी के दिन) सबसे जियादा सवाब का काम खून बहाना अर्थात कुर्बानी करना है और बताया "कुर्बानी के एक एक बाल के बदले एक एक नेकी है"।

(मिश्कात)।

हर बुद्धिमान व्यस्क मुसलमान जो साहिबे निसाब हो उस पर कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी वाजिब है इसमें उसको कंजूसी न करना चाहिए और कुर्बानी करके खूब सवाब लेना चाहिए।

❖❖❖

ईश भय पैदा करो —इदारा

यदि चाहते हो घूसखोरी दूर हो।
यदि चाहते हो कामचोरी दूर हो।।

यदि चाहते हो दूर भ्रष्टाचार हो।
यदि चाहते हो दूर अत्याचार हो।।

यदि चाहते हो नारियां निर्भय रहें।
यदि चाहते हो बेटियां निर्भय रहें।।

साथ में कानून के तुम ईश भय पैदा करो।
ईश भक्ति पैदा करो और ईश भय पैदा करो।।

साझी उसका है नहीं साझी न उसका तुम गढ़ो।
एक ईश्वर वाद वाला ईश भय पैदा करो।।

ईश भय बिन दूर ना होंगे विकार।
ईश भक्तो ईश भय पैदा करो।।

ईश के अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा।
उनकी बातें मान लो और ईश भय पैदा करो।।

रहमतें लाखों हों उन पर और हों लाखों सलाम।
उनकी उम्मत वालो उठो और ईश भय पैदा करो।।

शक्ति दायक मिष्ठान्न

मुकव्वी हल्वा (पौष्टिक मिष्ठान्न) –हुसैन अहमद

सामग्रीः देशी घी 250 ग्राम, सूजी 250 ग्राम, मिस्री 250 ग्राम, बँसलोचन, छोटी इलाइची, दार चीनी कलमी (लकड़ी) तीनों पाँच–पाँच ग्राम, बर्गे गाव ज़बां (गाव जबान की पत्ती), गुले गाव जबान (गावजबां का फूल) दोनों दस–दस ग्राम, सालब मिस्री 50 ग्राम, मीठे बादाम की गिरी 30 ग्राम, नारियल गिरी 50 ग्राम, मग्जे कद्दू शीरीं (मीठी लौकी के बीज की गिरी) 40 ग्राम, जाफरान (केसर) 1 ग्राम, अरके क्योड़ा (क्योड़ा जल) 50 मिली ग्राम, चाँदी के वरक 3 ग्राम (20 अदद) शहद 50 ग्राम।

बनाने की विधिः सारी दवाएं अत्तार या पंसारी के यहां से मंगवा लें, जाफरान, क्योड़ा जल में पीस कर या रगड़ कर मिला लें, चांदी के वरक शहद में घोट दें, सूजी, मिस्री, घी के अतिरिक्त सारी दवाएं बारीक कूट पीस लें, सूजी पहले थोड़े घी में भूनें मिस्री बारीक कूट कर उस में मिलाएं बाकी घी भी उस में डाल दें, फिर सारी दवाएं उस में खूब मिलाएं हल्वा तैयार हो गया अगर पैसे वाले हों तो ज़ाफरान के साथ डेढ़ ग्राम मुश्क (कस्तूरी) भी मिलाएं।

यह हल्वा सुब्ह को 20 ग्राम से ले कर 50 ग्राम तक खा कर दूध की चाय पीयें फिर कुछ रुक कर जब इच्छा हो नाश्ता करें। यह हल्वा शरीर को शक्ति देता है, मर्दाना शक्ति को बढ़ाता है, चेहरे को निखारता है, भूख लगाता है, मगर यह हल्वा जाड़ों ही में खाना चाहिए।

मुकव्वी हल्वा (पौष्टिक मिष्ठान्न):

सामग्रीः अच्छे चने 250 ग्राम, चिलग़ोज़ा 200 ग्राम, मस्तगी रूमी 10 ग्राम, दार चीनी कलमी 10 ग्राम, शहद 100 ग्राम, घी देशी 100 ग्राम।

बनाने की विधिः मस्तगी और दार चीनी (लकड़ी) बारीक कूट पीस लें, चिलग़ोज़ा अलग कूट कर बारीक कर लें। चने शाम को संभव हो तो प्याज के पानी में अन्यथा सादे पानी में भिगो दें, पानी इतना रहे कि चने ठीक से फूल जायें सुब्ह को चने घी में हल्का सा भून लें फिर चनों को पीस कर उस में चिलग़ोज़ा, मस्तगी, दारचीनी जो पहले से कूटे हुए हैं मिला दें, याद रहे चने में पानी बचा हो तो उसको न मिलायें फिर इस मिश्रित घोट को शहद में मिला कर रख लें, यह हल्वा सुब्ह को 20 ग्राम से 50 ग्राम तक खा कर दूध की चाय पियें फिर कुछ रुक कर जब इच्छा हो नाश्ता करें। इस हल्वे के खाने से शरीर में शक्ति आती है और मर्दाना शक्ति बढ़ती है। यह हल्वा हर मोसिम में खाया जा सकता है।

मुकव्वी चना (पौष्टिक चना):

चने अच्छे बड़े–बड़े, फार्मी चने उचित रहेंगे (काबुली चने नहीं) 30 ग्राम चने साफ करके शाम को पानी में भिगो दें, सुब्ह को नाश्ते से पहले एक एक चना खूब चबा चबा कर खायें फिर चनों का बचा हुआ पानी अस्ली शहद मिला कर पी लें। यह चना भी मर्दाना शक्ति बढ़ाने में बड़ा लाभदायक है। चना खाने के कुछ देर बाद नाश्ता करें। ◆◆◆

दीने इस्लाम .....

हक़ व इन्साफ को क़ायम करने में मदद ली जा सकती है। उम्मत को अब न किसी नये नबी की ज़रूरत है और न किसी ऐसे "इमामे मासूम" की हाजत जो अंबियाकिराम के काम की तकमील करे। और न इस्लामी नशअते सानिया और जदीद तहरीक के लिए किसी ऐसी दावत या शख़्सियत पर एतमाद की ज़रूरत है जो अक़्ल के अहाते में न आये और जिससे सियासी फ़ायदा उठाये जा सकने का अन्देशा हो। ◆◆◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः कुर्बानी किन लोगों पर वाजिब है?

उत्तरः जिन लागों के पास कुर्बानी के दिनों में 612 ग्राम 36 मिली ग्राम (साढ़े बावन तोला) चाँदी हो या उसकी कीमत के पैसे मौजूद हों या उसकी मालियत के बराबर का सामान ज़रूरी इखराजात से ज़ियादा हो तो ऐसे लोगों पर कुर्बानी वाजिब है।

प्रश्नः कुर्बानी करने के बजाए, कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का कर दी जाए तो क्या कुर्बानी अदा हो जाएगी?

उत्तरः कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करने से कुर्बानी अदा न होगी जिन लोगों पर कुर्बानी वाजिब है उनके लिए जरूरी होगा कि कुर्बानी के दिनों में जानवर कुर्बान करें, अलबत्ता अगर कुर्बानी के दिनों में किसी वजह से कुर्बानी न कर सके तो अब कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करना वाजिब होगा।

(फतावा हिन्दीयाः5/294)

प्रश्नः किसी साहिबे निसाब ने कुर्बानी का जानवर खरीदा मगर कुर्बानी के दिनों में किसी वजह से कुर्बानी न कर सका तो अब क्या करे?

उत्तरः उस जानवर को सद्का कर दे बेहतर होगा कि जिस मदरसे में मुसलमान गरीब बच्चों को खाना दिया जाता है वह जानवर उस मदरसे वालों को दे दे वह उसे ज़ब्ह करके गरीब बच्चों को खिला दें।

प्रश्नः जो शख्स साहिबे निसाब नहीं है अगर वह कुर्बानी का जानवर खरीद ले तो क्या उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी?

उत्तरः अगर कोई गरीब मुसलमान कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी की नीयत से, कुर्बानी का जानवर खरीदे तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी लेकिन अगर कुर्बानी के दिनों से पहले जानवर खरीदा था तो उस पर कुर्बानी वाजिब न होगी।

(रद्दुलमुहतारः 6/321)

प्रश्नः किन जानवरों की कुर्बानी जाइज है?

उत्तरः बकरा, बकरी, भेड़ (नर व मादा), दुंबा (नर व मादा), गाय (नर व मादा), भैंस, भैंसा, पड़वा, ऊँट, ऊँटनी की कुर्बानी जाइज है। हमारे यहां गाय का ज़ब्ह करना कानूनन मना है, इसलिए यहां गाय की कुर्बानी नहीं की जाती, मुसलमानों को चाहिए कि यहां गाय की कुर्बानी करने का इरादा न करें ताकि मुसलमान कठिनाइयों में न पड़ें।

प्रश्नः कुर्बानी के जानवरों की उम्र क्या होनी चाहिए?

उत्तरः ऊँट और ऊँटनी की उम्र कुर्बानी के वक्त पाँच साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, भैंस या भैंसा की उम्र कुर्बानी के वक़्त दो साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, बकरी, बकरा, भेंड़ (नर व मादा), दुंबा (नर व मादा) की उम्र कुर्बानी के वक़्त एक साल या उससे ज़ियादा होना चाहिए, दुंबा और भेड़ अगर खूब सिहतमन्द और मोटे हों देखने में एक साल

के लगें तो एक साल से कम (6 माह) के भी कुर्बानी में ज़ब्ह किये जा सकते हैं लेकिन एहतियात इसी में है कि वह भी एक साल से कम के न हों।

प्रश्नः जो जानवर बाजार से खरीदे जाते हैं उनकी सही उम्र नहीं मालूम हो पाती ऐसे में क्या करना चाहिए?

उत्तरः कुर्बानी का जानवर खरीदते वक़्त यह देख लेना चाहिए कि जानवर दाँता है या नहीं अगर दाँता नहीं है तो कुर्बानी के लिए ठीक नहीं, दाँत तो कम उम्र वाले जानवर के भी होते हैं, दाँतने से मुराद है आगे के दाँतों में दूध के दाँतों की जगह दो बड़े दाँत निकल आये हों, दाँतना हर आदमी नहीं पहचानता इसलिए जानकार से दिखवा लेना चाहिए।

प्रश्नः किन जानवरों की कुर्बानी में एक से ज़ियादा लोग शरीक हो सकते हैं?

उत्तरः ऊँट, ऊँटनी, भैंस, भैंसा, पड़वे में एक से ज़ियादा सात तक लोग शरीक हो कर कुर्बानी कर सकते हैं। अगर एक बड़े जानवर में एक से ज़ियादा लोग शरीक हों तो किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो।

प्रश्नः कुर्बानी का जानवर कैसा होना चाहिए?

उत्तरः अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी का जानवर अच्छा और तैयार होना चाहिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अंधे, काने, लंगड़े, और दुम कटे जानवर की कुर्बानी न करें।

लंगड़े का मतलब यह है कि वह तीन पांव से चलता हो, एक पांव ज़मीन पर रखा नहीं जाता, अगर रखता भी है तो उससे चलता नहीं, तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं है। (फतावा आलम गीरी)

जिन जानवरों के कान या दाँत बिल्कुल न हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं। अलबत्ता अगर दो चार दाँत न हों या एक कान एक तिहाई से कम कट गया हो तो उस की कुर्बानी दुरुस्त है। जिस जनवर का सींग जड़ से टूट गया हो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं अलबत्ता अगर थोड़ा से टूटा है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है, जिस जानवर की पैदाइशी सींग नहीं हैं उस की कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्नः दुबले जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः दुबले जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है लेकिन अगर इतना दुबला है कि उसके बदन पर गोश्त ही नहीं है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

प्रश्नः कुर्बानी का जानवर खरीदने के बाद कोई ऐब पैदा हो जाये तो क्या करें?

उत्तरः कुर्बानी का जानवर खरीदने के बाद अगर उसमें ऐसा ऐब पैदा हो जाये जिसकी वजह से कुर्बानी दुरुस्त नहीं तो अगर वह गरीब है तो उसी जानवर की कुर्बानी कर दे और अगर अमीर है तो दूसरा बे ऐब जानवर खरीद कर कुर्बानी करे।

प्रश्नः गाभिन जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः गाभिन जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है और अगर उसके पेट का बच्चा जिन्दा निकल आये तो उसको भी ज़ब्ह कर दे लेकिन गाभिन

जानवर की कुर्बानी न करना ही बेहतर है।

प्रश्नः कुर्बानी की खाल का क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्बानी की खाल अपने काम में ला सकते हैं जैसे जा नमाज़ बना लें तकिया बना लें, झोला बना लें वगैरा, कुर्बानी की खाल किसी को हदीया भी कर सकते हैं लेकिन कुर्बानी की खाल अगर बेची गई तो उसकी कीमत नादार मुसलमान का हक है कुछ मदरसे वाले उस कीमत से मुदर्रिसीन की तनख्वाहों या मदरसे की इमारत बनाने में खर्च करते हैं जो जाइज नहीं है उनको चाहिए कि कुर्बानी की खाल की कीमत ग़रीब तलबा पर खर्च करें। कुर्बानी की खाल की कीमत मस्जिद बनाने में भी खर्च करना जाइज नहीं है।

प्रश्नः क्या कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को दिया जा सकता है?

उत्तरः कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिमों को भी दिया जा सकता है मगर इसका ख़्याल रहे कि एक तिहाई गोश्त गरीब मुसलमानों को पहुंचाने और एक तिहाई गोश्त अजीज़ों को देना और एक तिहाई अपने घर वालों पर खर्च करना बेहतर है, अगर बड़ा खानदान है और खुद पूरा गोश्त घर वाले खा लें, तक्सीम न कर सकें तो कोई गुनाह भी नहीं

❖❖❖

मेरी बे ज़ुबान .....

पुस्तक "रियाजुस्सालिहीन" का उर्दू में "जादे सफर" के नाम से अनुवाद किया तथा अली मियां की अरबी पुस्तकें किस़सुन्नबियीन का उर्दू अनुवाद करके बच्चों के लिए किससुल अंबिया नाम से किताबें तैयार कीं।

मेरे पिता के फूफा सय्यिद अब्दुर्रज्जाक कलामी की लिखी पुस्तकें गोहरे मख्ज़ूँ, हिसामुल इस्लाम, समसामुल इस्लाम पढ़ीं और सुनीं, उन किताबों के पढ़ने से मेरे साहस में दृढ़ता आई, दिन में मेरी खाला यह किताबें पढ़ कर सुनाती, घर के लोग बड़ी रुचि से सुनते और रात में मैं और अली सहा–बए–किराम के हालात इस तौर पर बयान करते कि सुन्ने वाले झूम जाते।

उसी समय में मैंने अपने पिता की लिखी "गुले राना" पढ़ी तथा दीवाने गालिब, दीवाने मोमिन, कुल्लीयाते मीर तकी मीर, मीर दर्द, सौदा, आतिश, अमीर मीनाई और कुल्लियाते अक्बर इलाहाबादी, मुसद्दसे हाली और अपने दादा साहब की मुसद्दसे ख़्याली, इक्बाल की बाँगे दिरा और शिक्वा, जवाबे शिक्वा पढ़ीं उन किताबों को पढ़ने से शेर व शाइरी (कविता) की ओर मन का झुकाव हुआ और शेर कहने के योग्य हुई, मेरी रुचि दुआ तथा मुनाजात की ओर अधिक थी, वह रुचि रंग लाई, अतएव मुनाजातों का एक मजमूआ (संग्रह) तैयार हो गया अल्लाह तआला उन दुआओं और मुनाजातों को स्वीकृत प्रदान करे और हर बहन को भले काम करने का सामर्थ्य दे।

❖❖❖

प्रेम संदेशा

"सच्चा राही" आया है
प्रेम संदेशा लाया है
मानव मानव भाई हैं
यह पाठ पढ़ाने आया है

सय्यिदुना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की महान परीक्षाएं

—फ़ौजिया सिद्दीक़ा फ़ाज़िला

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह के प्रिय महान सन्देष्टा हैं, जिनको अल्लाह की ओर से खलीलुल्लाह (अल्लाह के मित्र) की उपाधि मिली हुई है उनके वंश में अनेक सन्देष्टा हुए हैं अतः उनको अबुल अंबिया (नबियों के पिता) भी कहा जाता है, हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उन्हीं की सन्तान में हैं, अल्लाह तआला ने उनकी बहुत सी परीक्षाएं लीं और उन पर बड़े पुरस्कार भी किये उन पर अल्लाह की दया तथा पुरस्कारों का इतना महत्व है कि अल्लाह के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि ब सल्लम ने अपनी उम्मत को दुरुद सिखाया और हर नमाज़ के अन्त में उसे पढ़ने की शिक्षा दी है।

उसका अनुवाद इस प्रकार है:—

"हे अल्लाह मुहम्मद पर कृपा कर तथा मुहम्मद की आल (सन्तान तथा घर वालों) पर कृपा कर वैसी कृपा जैसी इब्राहीम पर और इब्राहीम की सन्तान पर कृपा की निः संदेह तू प्रशन्सा योग्य बड़ा महान है, हे अल्लाह मुहम्मद पर बरकत (सम्पन्नता) उतार तथा मुहम्मद की सन्तान पर बरकत उतार वैसी ही बरकत जैसी इब्राहीम और उनकी सन्तान पर बरकत उतारी, निःसंदेह तू प्रशन्सा योग्य बड़ा महान है। अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उनके जन्म से लेकर देहान्त तक पग पग पर पुरस्कृत किया, उन पर महान पुरस्कार तथा कृपा उनकी परीक्षाओं में उनको सफलता प्रदान करना है जिन का वर्णन पवित्र कुर्आन में अनेक जगहों पर आया है, हम यहां कुछ का उल्लेख कर रहे हैं, अल्लाह तआला ने सूचित किया कि हम इब्राहीम को पहले ही सत्य मार्ग प्रदान कर चुके थे और हमने जो कुछ उनको दिया उसे हम भली भांति जानते हैं। (21:51) अतएव इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने पिता आज़र से कहा कि आप मूर्तियों को पूज्य बनाए हुए हैं मैं कहता हूं कि आप और आपकी क़ौम खुली हुई पथभ्रष्टता में है, अल्लाह तआला सूचित करते हैं कि हमने इब्राहीम को पृथवी तथा आकाशों के अजाइबात दिखाए ताकि उसका यक़ीन और इतमीनान ज़ियादा हो। (6:74,75) परन्तु उनकी क़ौम शिर्क में फंसी हुई थी, मूर्ति पूजा के साथ न जाने किन किन को पूज्य बनाए हुए थी, नक्षत्रों को पूजती , चांद को पूजती, सूर्य को पूजती, इब्राहीम अलैहिस्सलाम सोचते रहते किस प्रकार क़ौम को समझाएं, अतएव एक रात एक बड़े नक्षत्र को देखा और क़ौम को दिखाया और जब वह अस्त हो गया तो क़ौम को सम्बोधित कर के कहा तुम कहते हो यह मेरा पूज्य है परन्तु यह तो किसी और का वशीभूत है, जिसके आदेश से यह अस्त हो गया और कहा मैं तो ऐसे अस्त हो जाने वाले को पूज्य बनाने के लिए पसन्द नहीं करता, संकेत था कि पूज्य

तो वह है जिस का यह वशीभूत है। परन्तु कौम न समझी। फिर एक रात चमकते चांद को देख कर और कौम को दिखा कर कहा तुम लोग कहते हो यह मेरा स्वामी है परन्तु जब वह अस्त हो गया तो कहा देखो यह भी किसी और का वशीभूत है, मैं ऐसे को जो किसी और का वशीभूत हो पूज्य बनाने के लिए पसन्द नहीं करता, संकेत था कि पूज्य तो वह है जिसके वश में नक्षत्र भी हैं और चांद भी परन्तु कौम न समझी, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा अगर मेरा स्वामी (रब) मुझे सत्य मार्ग न दिखाता तो मैं भी तुम्हारी तरह पथ भ्रष्ट हो जाता।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बड़ी चिन्ता थी कि किस प्रकार कौम समझे अतएव एक दिन चमकते हुए सूरज को देख कर और कौम को दिखा कर कहा कि यह सूर्य सब चमकने वालों में सबसे बड़ा है अतः तुम लोग कहते हो यह मेरा स्वामी है, पूज्य है, परन्तु जब सूर्यास्त हो गया तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कौम को सम्बोधित करके कहा देखो यह भी अस्त हो गया, यह भी किसी और का वशीभूत है अतः मैं ऐसे को अपना स्वामी पूज्य बनाना पसन्द नहीं करता जो किसी और का वशीभूत हो, संकेत था कि यह नक्षत्र, यह चन्द्रमा यह सूर्य जिसके वशीभूत हैं और जिसने इनको निर्मित किया वही पूज्य है परन्तु क़ौम न समझी।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहाः—

मैंने तो एकाग्र हो कर अपना मुख उस की ओर कर लिया है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं।

उनकी क़ौम के लोग उससे झगड़ने लगे, उसने कहा "क्या तुम लोग मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो? जबकि उसने मुझे मार्ग दिखाया है, मैं उनसे नहीं डरता, जिनको तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा हो कर रहता है, प्रत्येक वस्तु मेरे रब की ज्ञान—परिधि के भीतर है, फिर क्या तुम चेतोगे नहीं? परन्तु क़ौम न चेती।

क़ौम को समझाने और क़ौम के झगड़ने का यह बयान पवित्र कुर्आन की सूरतुल अनआम में आयत नं0 74 से आयत नं0 83 तक फैला हुआ है, यहां उसका टीकाई भावार्थ लिखा गया है अल्लाह तआला ने इस परीक्षा में इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम की बुराईयों से सुरक्षित रखा और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनको अल्लाह के सुझाए तर्कों से निरूत्तर किया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने पिता से स्पष्ट रूप से कह चुके थे कि आप और आपकी क़ौम पथ भ्रष्टता में पड़ी है, परन्तु इसका उनके दिल पर कोई असर न पड़ा था, आज़र मूर्तियां निर्मित भी करते और मूर्ति पूजक भी थे, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से चाहा कि वह अपने पिता को समझाने की समस्त प्रक्रियाएं पूरी कर दें अतः उन्होंने अपने पिता से सीधे बात की जिसका उल्लेख पवित्र कुर्आन में इस प्रकार हैः

"जब कि उसने (इब्राहीम ने) अपने बाप से कहा ऐ मेरे बाप आप उस

चीज़ को क्यों पूजते हैं जो न सुने न देखे और न आपके कुछ काम आए, ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा ज्ञान आ गया है जो आपके पास नहीं आया, अतः आप मेरा अनुकरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा, ऐ मेरे बाप शैतान की बन्दगी न कीजिए, शैतान तो रहमान का अवज्ञाकारी है, ऐ मेरे बाप मैं डरता हूं कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े, और आप शैतान के साथी होकर रह जाएं, उसने (बाप ने) कहा ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे माबूदों से फिर गया है? यदि तू बाज न आया तो मैं तुझ पर पथराव कर दूंगा, तू मुझ से अलग हो जा, लम्बे समय के लिए, (इब्राहीम ने) कहा सलाम है आपको, मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूंगा वह तो मुझ पर बहुत मेहरबान है, मैं आप लोगों को छोड़ता हूं और उनको भी जिन्हें अल्लाह से हट कर आप लोग पुकारा करते हैं, मैं तो अपने रब को पुकारूँगा (अर्थात उसी को पूजूंगा) आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर बेनसीब न रहूंगा, फिर जब वह (इब्राहीम) उन लोगों से और जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते थे उनसे अलग हो गया तो हम ने उसे इसहाक़ और याकूब प्रदान किये और हर एक को हमने नबी बनाया और उन्हें अपनी दयालुता से हिस्सा दिया और उन्हें हमने सच्ची उच्च ख्याति प्रदान की। (सूरः मरयमः42–50)

इस परीक्षा में भी इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने पिता तथा क़ौम के विकारों से सुरक्षित रहे और ईशादेश पहुंचाने में कोई कमी न की, तथा वादे के अनुकूल आप बाप के लिए दुआ करते रहे पवित्र कुर्आन में इसका भी उल्लेख है, "ऐ मेरे रब मेरे पिता को क्षमा कर दीजिए, निश्चय ही वह पथ भ्रष्ट लोगों में से हैं। (अश्शुअ़राः86)

ऐ हमारे रब मुझे तथा मेरे मां बाप को और ईमान वालों को हिसाब के दिन क्षमा कर दीजिए।

(सूरः इब्राहीमः41)

इससे ज्ञात हुआ कि वह अपने पिता के लिए बराबर दुआ करते रहे परन्तु उनको जब ज्ञात हुआ कि उनके पिता अल्लाह के दुशमनों में से हैं तो उनके लिए दुआ करना छोड़ दी, जैसा कि पवित्र कुर्आन में उल्लेख है, "इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो क्षमा की प्रार्थना की थी वह तो केवल एक वादे के कारण की थी, जो वादा वह उससे कर चुका था, फिर उस पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे विरक्त हो गया, वास्तव में इब्राहीम बड़ा ही कोमल हृदय वाला अत्यन्त सहनशील था"।

(तौबाः114)।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम के समय का बादशाह नमरूद से मुबाहसा (तर्क वितर्क) हुआ, "क्या तुमने उसको नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के विषय में झगड़ा किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसको राज दे रखा था, जब इब्राहीम ने कहा मेरा रब वह है जो जिलाता है, और मारता है। नमरूद ने दो आदमियों को बुलवाया एक को क़त्ल कर दिया, एक को छोड़ दिया, उस (ज़ालिम) ने कहा मैं भी तो जिलाता और मारता हूं, इब्राहीम ने कहा अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है तू उसे पश्चिम से ले आ, इस पर वह अधर्मी चकित रह गया, अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा

मार्ग नहीं दिखाता है।

(सूरः बकरा–258)

अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मदद की और बादशाह उनके विरुद्ध उस समय कुछ न कर सका, परन्तु मन ही मन में सुलगता रहा। इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कौम मूर्ति पूजक थी, इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बड़ी चिन्ता थी कि किसी प्रकार क़ौम समझे अतएव एक समय उन्होंने कौम को जब बुतों के गिर्द देखा तो उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि यह मूर्तियां क्या हैं जिन (की पूजा) पर तुम जमे बैठे हो? बोले कि हमने बाप–दादों को उन्हीं की पूजा करते देखा है। (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बड़े खुली हुई गुमराही में रहे। (वह) बोले तू हमारे पास सच्ची बात ले कर आया है या खिलवाड़ करता है, (इब्राहीम ने) कहा नहीं, (सच मानो कि) वही तुम्हारा परवरदिगार है जो आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है जिसने उनको पैदा किया, और मैं इसी बात का क़ायल हूं। अल्लाह की क़सम तुम्हारे पीठ फेरने के बाद मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर करूंगा। फिर इब्राहीम ने एक दिन उन लोगों की ग़ैर मौजूदगी में उन बुतों को (तोड़ फोड़ कर) टुकड़े–टुकड़े कर दिया, मगर उनके बड़े बुत को इस ग़रज़ से (रहने दिया) कि शायद वह (पूजने वाले फिर) उसकी तरफ़ आवें। जब लोगों को मूर्तियों के तोड़े जाने का हाल मालूम हो गया तो उन्होंने कहा, हमारे पूज्यों के साथ यह (काम) किसने किया? वह कोई बड़ा अन्यायी है, फिर आपस में कहने लगे कि वह नवजवान जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है, उसको हमने इन मूर्तियों की बुराई का ज़िक्र करते हुए सुना है, लोगों ने कहा उसको लोगों के सामने ले आओ ताकि लोग देखें। (गरज़ इब्राहीम बुलाए गये और लोगों ने) पूछा की इब्राहीम! हमारे पूज्यों के साथ यह हरकत क्या तूने की है? (इब्राहीम ने) कहा (नहीं) बल्कि यह जो इन सब में बड़ी (मूर्ति) है उसने यह हरकत की (होगी), सो अगर यह कुछ बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो। उस पर लोग अपने जी में सोचने और आपस में कहने लगे कि लोगो! तुम्हीं अन्यायी हो। फिर (अपने सिरों के बल औंधे) शर्म से झुक गये (लेकिन फिर भी बाज़ ना आए और इब्राहीम से) बोले कि तुम को तो मालूम है कि वह (बुत) बोला नहीं करते। (इस पर इब्राहीम ने) कहा, क्या फिर तुम अल्लाह के सिवाय ऐसों को पूजते हो कि जो ना तुम को कुछ फाइदा ही पहुंचा सके और न कुछ नुक्सान ही। अफ़सोस तुम पर, और उन चीज़ों पर जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पूजते हो! क्या तुम नहीं समझते हो? (तब वह) कहने लगे कि अगर तुमको (इब्राहीम की हरकत की सज़ा देना और) कुछ करना है तो इब्राहीम को (आग में) जला दो और अपने पूज्यों की (प्रतिष्ठा क़ायम रहने में मदद करो) हमने (आग को) हुक्म दिया कि ऐ आग! इब्राहीम के हक़ में ठंडी और आराम देने वाली हो जा। और लोगों ने उन (इब्राहीम) का बुरा चाहा मगर हमने उन्हीं को नुक़सान में डाला।

(सूरः अंबिया–52–70)

बुतों को तोड़ने और आग में डाले जाने की इस भयावह परीक्षा में भी अल्लाह ने अपने ख़लील (मित्र) को

सफल किया, यह सब कुछ इसलिए किया गया था ताकि क़ौम चेते परन्तु इतने बड़े चमतकार से भी क़ौम प्रभावित न हुई और जैसी थी वैसी ही रही अन्त में इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने क़ौम को समझाते हुए कहा: "और उसने कहा कि अल्लाह से हट कर तुमने कुछ मूर्तियों को केवल सांसारिक जीवन में अपने पारस्परिक प्रेम के कारण पकड़ रखा है फिर क़ियामत के दिन तुममें से एक दूसरे का इन्कार करेगा और तुम में से एक दूसरे पर लानत करेगा, तुम्हारा ठिकाना आग (जहन्नम) है (उस समय) तुम्हारा कोई सहायक न होगा"। (अलअनकबूत: 25)

इस स्पष्ट तथा सत्य बात की कौम में से केवल हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने पुष्टि की और माना "फ़आमन लहू लूत"। (अल अन्कबूत: 26)

अब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से अपना वतन बाबुल छोड़ कर शाम जाने का फैसला किया पवित्र कुर्आन में है: "और हम उसे (इब्राहीम) और लूत को बचा कर उस भूभाग (शाम) की ओर निकाल ले गये जिसमें हमने दुन्या वालों के लिए बरकतें रखी थीं, वह वही बरकत वाला भूभाग है जहां आजकल आग बरस रही है, यह बात उस आयत के विरुद्ध नहीं है, यदि बरकत वाले भूभाग पर ईशावज्ञा होगी तो अल्लाह का प्रकोप वहां भी आएगा, वही वह भूभाग है जिसके एक भाग पर जब अल्लाह की अवज्ञा हुई तो क़ैमे लूत पर अल्लाह का प्रकोप आया था।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम शाम हिजरत कर गये उनके साथ उनकी पत्नी "सारा" भी थीं, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम जो अल्लाह के पैगम्बर थे और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे भी थे वह भी शाम चलेगये, हज़रत सारा बड़ी बुज़ुर्ग औरत थीं, अल्लाह की मरज़ी वह बांझ थीं, शाम जाते समय रास्ते में मिस्र का बादशाह हज़रत सारा की महत्ता तथा उनके चमत्कारों से प्रभावित हो कर अपनी एक दासी "हाजरा" को भेंट किया था, शाम पहुंच कर हज़रत सारा ने अपने उस दासी "हाजरा" को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को भेंट कर दिया और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हाजरा को अपनी पत्नी बना लिया, अभी तक हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलम के कोई संतान न थी, उन्होंने दुआ की "मेरे रब मुझे नेक सन्तान दे, (पस उनको रब ने शुभ सूचना दी) पस हमने उसे एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी"।

(साफ्फात:100–101)

हज़रत हाजरा की कोख़ से एक सुन्दर बच्चे का जन्म हुआ, इस्माईल नाम रखा गया, परन्तु फिर परीक्षा हुई ईशादेश हुआ कि इन मां बेटे को मक्के की खुश्क पहाड़ियों के बीच छोड़ आओ, 86 वर्ष की आयु में दुआवों के बाद इस बच्चे का पुरस्कार मिला था, परन्तु अल्लाह के खलील अल्लाह के आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकते थे, मां बेटे को मक्का के उस स्थान पर जहां आज काबा है, उस समय वहां सूखी पहाड़ियों के सिवा कुछ न था, पहुंचा दिया, जब छोड़ कर चलने लगे तो हजरत हाजरा न रोईं न चिल्लाईं, पूछा क्या मुझे आप अल्लाह के आदेश पर यहां छोड़ रहे हैं? जवाब दिया हां, हजरत हाजरा ने

कहा फिर तो अल्लाह मुझे नष्ट न करेगा, इब्राहीम अलै0 चले गये, मां बेटे वहां रह गये कुछ खाने पीने का सामान था, वह समाप्त हो गया, बच्चा प्यासा हुआ परन्तु पानी कहां? मां ने बच्चे को जमीन पर लिटा कर सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ कर पानी ढूंढने लगी परन्तु पानी कहां? फिर मरवा पहाड़ी पर दौड़ गई बीच का भाग नीचा था बच्चा आंखों से ओझल हुआ इसलिए दौड़ पड़ीं और मरवा पर चढ़ कर कभी बच्चे को देखती तो कभी पानी ढूंढती, इस प्रकार कई बार दौड़ लगाई।

हजरत हाजरा की यह दौड़ अल्लाह तआला को ऐसी प्रिय हुई कि हर हज या उमरा करने वालों के लिए सफा तथा मरवा के बीच सात बार चलना आवश्यक हो गया और कुछ भाग में मर्दों को दौड़ना भी पड़ता है।

जब पानी कहीं न मिला तो हज़रत हाजरा अपने लाडले इस्माईल के पास आई तो देखती हैं कि वहां पानी का एक स्रोत जारी है, यह स्रोत अल्लाह तआला ने जिब्रील अलै0 को भेज कर जारी करवाया था।

इस प्रकार पहाड़ियों के बीच मां बेटे रहने लगे अल्लाह ने ज़मज़म का स्रोत निकाल ही दिया था, खाने का भी प्रबन्ध किया होगा, जब तब अल्लाह के हुक्म से इब्राहीम अलैहिस्सलाम पत्नी तथा बेटे से मिलने आ जाते थे जब बेटा इस्माईल भला चंगा हो गया तो फिर एक बड़ी परीक्षा हुई, इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने स्वप्न देखा कि वह बेटे को ज़ब्ह कर रहे हैं इससे वह समझे कि बेटे को ज़ब्ह का आदेश है बेटे से इसका वर्णन किया बेटा भी तो पैग़म्बरी पाने वाला था कहा अब्बा जान यह अल्लाह का आदेश है आप मुझे ज़ब्ह कीजिए मैं इसके लिए धैर्य पूर्वक तैयार हूं।

86 वर्ष की आयु में मिले प्रिय एकलौते बेटे को ले कर अल्लाह के आज्ञा पालन में ज़ब्ह करने के लिए मिना चल दिये रास्ते में तीन स्थानों पर शैतान ने इब्राहीम अलै0 को बहकाने का प्रयास किया तीनों स्थानों पर हज़रत इब्राहीम अलै0 ने उसे कंकरियां मार कर भगाया, कंकरियां मारने का यह कर्म अल्लाह को ऐसा प्रिय हुआ कि हर हाजी के लिए उन स्थानों पर कंकरियां मारना अनिवार्य हुआ।

मिना पहुंच कर बेटे को लिटा दिया और अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और बेटे के गले पर छुरी चला दी, आप समझे बेटे को ज़ब्ह कर दिया परन्तु पट्टी खोली तो देखा बेटा इस्माईल अलग खड़ा है और एक दुंबा (भेंड़ की प्रजाति का एक पशु) ज़ब्ह किया हुआ पड़ा है।

अल्लाह की ओर से आवाज़ आई ऐ इब्राहीम अपना स्वप्न सच कर दिखाया, हम इसी प्रकार नेक लोगों को बचा लेते हैं।

यह सारा बयान सूरतुस्साफ्फात की आयत–102–105 तक में उल्लेखित है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने स्वप्न में बेटे को ज़ब्ह करते देखा था यह नहीं देखा था कि ज़ब्ह कर दिया। जब वह छुरी चला रहे थे तो अल्लाह के हुक्म से हज़रत जिब्रील जन्नत से एक दुंबा लाए और हज़रत इस्माईल को हटा कर दुंबा लिटा दिया और दुंबा ज़ब्ह हो गया, यह ज़ब्ह अल्लाह तआला को ऐसा प्रिय हुआ कि अपने अन्तिम नबी की उम्मत के धनवानों पर हर वर्ष कुर्बानी के दिनों में ज़ब्ह करना ज़रूरी हुआ।

शेष पृष्ठ .....38...पर...

नदवतुल उलमा के विभागों का संक्षिप्त वर्णन

—प्रस्तुतिः प्रबंधक कमेटी नदवतुल उलमा, लखनऊ

दारूल उलूमः- शिक्षा विभाग "दारुल उलूम" के अन्तर्गत जो ख़ास विभाग हैं उनमें कुल्लियतुश्शरीअः व उसूलुद्दीन, कुल्लियतुललुग़तिल अरबियाः व आदाबुहा, कुल्लियतुद दअ़वह वल एलाम, दारुल इफ़्ता वल क़जा, अलमजमउल इल्मी लिल बुहुस वद दिरासात, अलमअ़ हदुलआली लिद्दअ़वह वलफिकरिल इस्लामी, इसके अलावा हिफ़्ज़ व तजवीदुल कुरआ़न के विभाग हैं। और शोब–ए–सहाफ़त व अलसिनह, और मौलाना जुहूरुल इस्लाम कम्प्युटर सेन्टर हैं, शिक्षा विभाग में विद्यार्थियों की संख्या 3160 है, और अध्यापकों और स्टाफ़ की संख्या 136 है।

अमली तौर पर दअ़वती काम करने के लिए इन्तिज़ाम है, जिससे तालिब इल्मों की दअ़वती तरबियत भी होती है और तालिब इल्मों में इल्मी सलाहियत पैदा करने के लिए "अन्नादिल अरबी", दौरतुल मुसाबिक़ातुल इल्मिया वल अदबियह और हास्टलों में "जमीअतुल इस्लाह" के नाम से इल्मी, तहज़ीबी और अदबी प्रोग्राम आयोजित किये जाते हैं।

मअ़हद दारूल उलूम (सिकरोरी) लखनऊः- दारुलउलूम के सिकेन्ड्री क्लासेज़ का इन्तिज़ाम हरदोई रोड सिकरोरी में है, यहां का शिक्षा स्तर वर्तमान पाठशालाओं के स्तर के लिहाज़ से मिडिल और हाई स्कूल के स्तर के अनुकूल है, इसमें अरबी और उलूमे इस्लामिया के अलावा अंग्रेज़ी और जनरल साइंस हाई स्कूल के स्तर तक है, इस साल विद्यार्थियों की संख्या 605 है और अध्यापकों और स्टाफ़ की संख्या 40 है।

मअ़हद सय्यदिना अबी बक्र सिद्दीक़(महपतमऊ)लखनऊः-

मअ़हद नदवतुल उलमा के अन्तर्गत काम कर रहा है जिसमें शोब–ए–हिफ़्ज के साथ साथ इब्तिदाइया से ले कर आलिया ऊला तक तालीम का नज़्म है, इस वक़्त तालिब इल्मों की संख्या 785 है, और पढ़ाने वालों की संख्या 28 है, और नानटीचिंग स्टाफ़ की संख्या 18 है, सालाना खर्च 65 लाख रूपये है जो नदवतुल उलमा के ज़िम्मे है।

मदरसा मज़हरूल इस्लाम (बिल्लोचपुरा) लखनऊः- शहर के केन्द्रीय मुस्लिम इलाक़े में नदवतुल उलमा की एक बड़ी ज़मीन पर स्थित है, इसके ज़रिए दीनी तालीमी माहौल में काफ़ी इज़ाफ़ा हो रहा है और समाज सुधार का अच्छा काम अनजाम पा रहा है, फिल हाल मदरसे में विद्यार्थियों की संख्या 700 और टीचरों और स्टाफ की संख्या 45 है, मदरसे में निर्माण काम बराबर चल रहा है, इस मदरसे में तनख़्वाहों, विद्यार्थियों के वज़ीफ़ों की मद में नदवतुल उलमा 53 लाख रूपये सालाना खर्च करता है। तअ़मीरी काम के मसारिफ़ इसके अलावा हैं।

मकातिबे शहर (प्राइमरी स्कूल):- नदवतुल उलमा के शोब–ए–मकातिब के तहत शहर लखनऊ में मकातिब का निज़ाम भी चल रहा है जिनकी तादाद 11 है और टीचरों की संख्या 45 है, पढ़ने वाले बच्चों की संख्या 1285 है, इन मकातिब पर भी नदवातुल उलमा 42 लाख रूपये सालाना ख़र्च करता है।

मदरसा सय्यदिना उस्मान बिन अफ़्फ़ान, रायबरेली:- पिछले साल यह तजवीज़ (प्रस्तावना) आयी की रायबरेली शहर में कोई दीनी तालीमी मदरसा नहीं है और दारुलउलूम नदवतुल उलमा से संबंधित जो इदारे हैं वह सब शहर के बाहर देहातों में हैं और शहर में जो मदरसे हैं वह गैरों के हैं, जिनकी वजह से बड़ा दीनी नुक़सान पहुंच रहा है। शहर के केन्द्रीय स्थान पर नदवतुल उलमा की ज़मीन है, उसमें अगर नदवतुल उलमा अपनी ब्रांच खोले और दरजे हिफ़्ज़ और धीरे धीरे सेकेन्ड्री क्लासेज़ स्थापित की जाये तो एक बड़ी दीनी ज़रूरत पूरी होगी और उस ज़मीन का उचित उपयोग भी होगा। प्रबंधक कमेटी नदवतुल उलमा की मनजूरी के बाद उस ज़मीन पर मदरसे का काम शुरु कर दिया गया है और दरजे हिफ़्ज़ और खुसूसी अव्वल की पूर्ण रूप से शुरुआत हो गई है, फ़िलहाल मदरसे में 18 तालिब इल्म और 6 लोगों का स्टाफ़ है।

मदारिसे मुलहिक़ा (सम्बन्धित मदरसे):- इस समय दारुल उलूम नदवतुल उलमा में संबंधित मदरसों की संख्या 322 तक पहुंच चुकी है, वर्तमान वर्ष 14 मदरसों का इल्हाक़ (सम्बद्ध) अमल में आया है, 24 मदरसों के इल्हाक़ की प्रार्थना पत्र विचाराधीन हैं। उनमें 6 ऐसे बड़े मदरसे हैं जहां आलमियत तक तालीम होती है बहुत से मदरसे ऐसे हैं जिनके अन्तर्गत मकातिब हैं, जिन इलाक़ों में यह मदारिस कायम हैं वहां दीन का प्रचार व प्रसार है और दअ़वत इलल्लाह का कम हो रहा है, मजलिसे निज़ामत नदवतुल उलमा के फ़ैसले के मुताबिक मुलहिक़ा मदारिस को तालीमी, तदरीसी (टीचिंग) इसलाही मैदान में मुतहर्रिक व फ़अ़आल (गतिशील व कर्मठ) बनाने और टीचरों की ट्रेनिंग के लिए हिन्द व नेपाल में पांच केन्द्र बना कर वर्कशाप का आयोजन किया गया है जिसका इच्छानुसार फ़ाइदा हुआ है।

दारूल इफ़्ता वलक़ज़ा:- फ़तावा नदवतुल उलमा की तीन जिल्दें (प्रतियां) प्रिन्ट हो कर मनज़रे आम पर आ चुकी हैं और चौथी जिल्द की तरतीब व तहक़ीक़ का काम जारी है।

इसके साथ शोब–ए–दारुल क़ज़ा का काम चल रहा है, दारुल कज़ा में अब तक इन्दिराज होने वाले मुक़दमात की तादाद 847 है, साले रवां इन्दिराज होने वाले मुक़दमात की तादाद 36 है और फैसले होने वाले मुक़दमात की तादाद 22 है और जो कार्यवाही के अन्तर्गत हैं उनकी तादाद 29 है।

फ़तवा ट्रेनिंग:- इस साल फ़ारिग़ होने वाले 15 तालिब इल्मों का चयन हुआ जो निश्चित कोर्स का अध्ययन करते हैं।

कुतुब ख़ाना शिबली नोमानी:- अलहम्दुलिल्लाह कुतुब खाने की किताबों में बराबर इज़ाफ़ा

हो रहा है। खरीदारी के अलावा अनेकों अहले इल्म से किताबें भी हासिल की जा रही हैं, इस वर्ष 4205 किताबें प्राप्त हुई, पहली मार्च 2016 ई0 तक कुतुब खाने की किताबों की सामूहिक संख्या 1,92,100 है, मुस्तआर कुतुब ख़ानों की किताबों की तादाद इसके अलावा है। इस साल 7419 नई किताबों का इन्दिराज हुआ।

कुतुब ख़ाने में मौजूद मख़तूतात (हस्तलिखित) की तफ़सीलात का इंदिराज कम्प्युटर में भी हो चुका है। छपी हुई किताबों की तफ़सीलात के इंदिराज का काम जारी है।

शोब-ए-दअ़वतो इरशादः-

इस शोबे (विभाग) की तरफ़ से लखनऊ के क़रीबी और आसपास के .इलाक़े विशेष कर उन देहातों में जहां कादयानियों ने मकातिब काएम कर लिये थे, मकातिब क़ायम किये गये और वहां ऐसे मुदिर्रसीन (अध्यापक) रखे गये जो मसाजिद में इमामत भी करें और बच्चों को दीनी तालीम देने के साथ वहां के बाशिन्दों (निवासियों) की दीनी रहनुमाई का काम भी अनजाम दें। कभी कभी उन इलाक़ों में दीनी जलसे किये जाते हैं जिनमें इसलाहे अक़ाएद की बात की जाती है, इसके अलावा दीनी मौजूआत (शीर्षक) पर सुधारात्मक किताबें छापी जाती हैं। शोबे की तरफ़ से उन इलाक़ों में सर्वे कराये जाते हैं जहां मुसलमानों की दीनी व तालीमी हालत ज़ीरो है, शोबे के अन्तर्गत उन इलाकों में 14 मकातिब काम कर रहे हैं जिन पर वार्षिक 15 लाख रूपया खर्च किया जाता है।

समाज सुधार कमेटीः-

इसके अलावा मुसलमानों में फैले हुए ग़लत रुसूम व रिवाज़ के सुधार के लिए समाज सुधार कमेटी के तहत जलसों का आयोजन होता है और इस सिलसिले में दीनी व इस्लाही लिट्रेचर भी तक़सीम किये जाते हैं।

पयामे इन्सानियतः- गैर मुस्लिमों में इस्लाम का परिचय और मानवता की बहुमूल्य बातों की ओर ध्यान देने के लिए पयामे इन्सानियत के नाम से पब्लिक जलसे किये जाते हैं। हिन्दी अंग्रेज़ी में लाभदायक लिट्रेचर तक़सीम किया जाता है, विरादराने वतन से मुलाक़ातें की जाती हैं। इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है, इस साल फ़ैज़ाबाद, अकबरपुर, बाराबंकी, इटावा और बनारस आदि शहरों में इस्टाल लगा कर बड़ी संख्या में किताबें बांटी गईं, इसके अलावा लखनऊ, उड़ीसा, हैद्राबाद, मुजफ़्फ़रनगर, अजमेर, मऊ वग़ैरह में जलसे किये गये और मानवता का सन्देश लिट्रेचर तक़सीम किया गया।

शोब-ए-तअ़मीर व तरक़्क़ी और नदवे की मस्जिदः-

तालिबइल्मों की बढ़ती तादाद की वजह से दारुलउलूम की मस्जिद नाकाफ़ी साबित हो रही थी नक़शे के मुताबिक़ नवम्बर 2013 ई0 में मस्जिद की तौसीअ़ (विस्तार) का काम शुरु किया गया, अलहम्दुलिल्लाह यह काम अब अन्तिम स्टेज पर है, बेसमेन्ट के फ़र्श में ग्रेनाइट पत्थर, ग्राउण्ड फ़्लोर और प्रथम फ़्लोर के फर्श में मारवल पत्थर

लगाया गया और पूरी छत पर ब्रिक कूबा का काम कराया गया, पूरी मस्जिद की पुताई और नई वाइरिंग और नया स्पीकर माइक हिस्टम लगाया गया, इस बड़ी तौसीअ़ (विस्तार) के बाद मस्जिद का रकबा बेस्मेन्ट 6960 स्क्वाएर फुट, ग्राउण्ड फ़्लोर 15423 स्क्वाएर फुट, और प्रथम फ़्लोर 13863 स्क्वाएर फुट, कुल क्षेत्रफल 36246 स्क्वाएर फुट, तैयार हो गया है, जिसमें पाँच हज़ार अफ़राद आसानी से नमाज़ अदा कर सकते हैं, खिड़कियों का काम शुरु कर दिया गया, मस्जिद के उत्तर और पूरब जानिब का काम पूरा हो गया है, इनशाअल्लाह बाक़ी काम भी हो जायेगा।

मस्जिद दारुल उलूम के सिलसिले में कुल इनकम 2,81,50,608 (दो करोड़, इक्क्यासी लाख, पचास हज़ार छः सौ आठ रूपये) और अब तक खर्च 2,60,83,159 (दो करोड़, साठ लाख, तिरासी हज़ार एक सौ उन्सठ रूपये) हुआ है। मस्जिद के तीन ओर खुदाई करके पी0सी0सी0 गिट्टी डाल कर इण्टर लाकिंग का काम कराया गया, इसके अलावा मस्जिद के सामने वज़ू खाने से मजलिस तहक़ीक़ात तक रोड की खुदाई करके पी0पी0सी0 गिट्टी डाल कर इण्टर लाकिंग का काम कर लिया गया और मस्जिद से गेट तक डामर सड़क बनाई गई।

मजलिस सहाफ़त व नशरियातः- नदवतुल उलमा से संबंधित एक अहम विभाग शोब–ए–मजलिस सहाफ़त व नशरियात है, यह अरबी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी चार ज़बानों में लाभदायक लेख पर आधारित पुस्तकें छापता है, यह पुस्तकें कोर्स में पढ़ाई जाने वाली हैं और उसके अलावा भी हैं। इस शोबे की तरफ़ से उर्दू में पन्द्रह रोज़ा "तअ़मीर हयात" अरबी में मासिक पत्रिका "अलबअ़सुल इस्लामी" और पंद्रह रोज़ा "अल–राइद" अंग्रेज़ी में मासिक पत्रिका "फ्रीग्रनस" और हिन्दी में "सच्चा राही" अलग अलग पत्रिकाएं प्रिन्ट होती हैं। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए नदवतुल उलमा, मजलिस –सहाफ़त को वार्षिक सहायता देता है।

मजलिस तहक़ीकात व नशरियात इस्लाम नदवा, लखनऊः- मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियात इस्लाम जो इस्लाम का फ़िकरी लिट्रेचर तैयार करती और फैलाती है, नदवतुल उलमा ही से संबंधित एक तहक़ीक़ी (अन्वेशणात्मक) संस्था है जो तहक़ीक व प्रकाशन का काम बुलन्द मेयार से अनजाम दे रही है और अब तक 350 किताबें छाप चुकी है।

दावत–ए–अदब इस्लामी आलमीः- यह शोबा नदवतुल उलमा में क़ाएम है, सेमिनारों, कांफ्रेंसों, मुलाकातों, पुस्तकों और पत्रिक़ाओं द्वारा साहित्यिक सेवाएं अनजाम देता है, एक त्रिमासिक पत्रिका "कारवाने अदब" पब्लिश करता है नदवतुल उलमा की तरफ़ से माली सहायता दी जाती है।

❖❖❖

–एक प्रवचन से ग्रहीत

बात प्रेम और भाई चारे की

–हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

इन्सान सिर्फ खाने का, कपड़े का और पैसे का मुहताज नहीं है। उस की भूख और प्यास सिर्फ पैसे और खाने–पीने की चीज़ों से नहीं जाती। वह सबसे ज़ियादा भूखा प्रेम का है अगर इन्सान को इस दुन्या में यह न मिले और सब कुछ मिल जाये तो यह दुन्या ऐसी मालूम होगी जैसे कोई म्यूज़ियम में गया हो ज़हां सब कुछ देखता है और हाथ कुछ भी नहीं लगता। वहाँ से खाली हाथ आता है। महब्बत से अपनी थकान भूल जाता है। गुस्सा भूल जाता है, दुःख–दर्द भूल जाता है, महब्बत ऐसी चीज़ है जिससे आदमी अपनी बीमारी भूल जाता है। इन्सान असल में महब्बत और प्रेम का भूखा है।

इस ज़माने की बहुत बड़ी बीमारी यह है कि आदमी को आदमी का एतिबार नहीं रहा, और हमारे राजनीतिज्ञों ने (खुदा इनको माफ करे और इनसे अच्छे काम ले) ऐतिबार खो दिया है। अपना एतिबार तो खोया ही दूसरों का एतिबार भी इन्होंने कमज़ोर कर दिया। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा। आदमी डरता है कि मालूम नहीं कौन सी मतलब की बात कही जायेगी और जब तो लोगों का यह हाल हो गया है कि लोग यह मानने के लिए तैयार नहीं कि बिना मतलब के कोई बात कही जा सकती है। या दुन्या में कोई एक आदमी भी ऐसा निकल सकता है, जो अपने मतलब (स्वार्थ) की बात न कहे। जो अनुभवी लोग हैं वह कहते हैं कि मतलब की बात ज़रूर आती है। फर्क सिर्फ समय का है। कोई फूहड़ होता है, जल्दबाज़ होता है, वह जल्दी मतलब की बात कह देता है और कोई ज़रा समझदार और सयाना होता है। वह देर में मतलब की बात कहता है। कोई अभी कह देगा, कोई शाम को कहेगा, कोई कल कहेगा, कोई छः महीने बाद कहेगा। मगर कहेगा ज़रूर। अब दुन्या का एतिबार जाता रहा। किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा।

यह दुन्या हौसला हिम्मत पर चल रही है। वरना दुन्या का हाल तो यह है कि आदमी कपड़े फाड़ कर जंगल को निकल जायें। पागल हो जायें और इन्सान से बिल्कुल निराश हो जायें कि इन्सान अब किसी काम का रहा नहीं। आपने सुना होगा कि दुन्या उम्मीद पर क़ायम है। यह बात सच है कि दुन्या उम्मीद पर क़ायम है।

मैं एक सन्त का क़िस्सा सुनाता हूं। इसी से अपनी तक़रीर शुरु करता हूं और इसी पर ख़त्म करूंगा। दिल्ली में एक बड़े सन्त थे। दिल्ली में उनको दिल्ली वाले सुल्तान जी कहते थे। कोई हज़रत महबूब इलाही कहता है कोई सुलतानुलमशायख़ कहता है। शायद आपने सुना हो कि दिल्ली में निज़ामुद्दीन एक महल्ला है। यह उन्हीं बुजुर्ग के नाम पर है। उनका नाम था, निज़ामुद्दीन औलिया रह0 उनके पास कोई भाई उनके कोई अक़ीदत मन्द (श्रद्धा रखने वाले) कैंची लाये। उन्होंने कहा मुझे कैंची की ज़रूरत नहीं है। मेरा कम काटना और फाड़ना नहीं है।

मैं दिलों को सीता और जोड़ता हूं। मैं दिलों को फाड़ता और काटता नहीं हूं, कैंची तो काटने और फाड़ने की चीज़ है। यह तो किसी और को दो। मुझे तो कोई सूई ला कर दो, जिससे मैं अपना काम कर सकूं। मेरा काम है मिलाना मेरा काम जुदा करना नहीं है।

इस समय कैंचियां तो बहुत चल रही हैं और बड़ी सस्ती हो गई हैं। मेरे ख़्याल में तो बहुत से लोग यूं ही लिए–लिए फ़िरते होंगे और किसी चीज़ को आप क्या कहें, ज़बान कैंची बन गई है। अख़लाक़ (आचरण) कैंची बन गये हैं और सबसे बड़ी कैंची क्या है? आप मुझे क्षमा करें। मैं पढ़ता–लिखता रहता हूं। लोगों से मिलता भी हूं। मैं तो यह देख रहा हूं कि सबसे बड़ी कैंची राजनीति है। यह बहुत बड़ी कैंची है। बड़ी धारदार और बहुत लम्बी। एक कैंची ऐसी होती है, जिसकी मार या जिसकी पहुंच घर या इससे भी कम होती है। लेकिन राजनीति की कैंची ऐसी है कि यहां हाथ में लीजिए और लखनऊ तक काम कर जाइए दिल्ली में कैंचियां हैं, जो सारे हिन्दुस्तान में अपना काम कर रही हैं। हर राजधानी और हर राजनीतिक पार्टी कैंची बनी हुई है। हर राजनीतिक नेता और हर पत्रकार, हर लिखने वाला यही काम कर रहा है। क़लम कैंची बन गया है। वह कलम जो मिलाने के लिए था और वह ज़बान जो मिलाने के लिए थी, जो प्रेम के फूल बरसाने के लिए थी, कहते हैं कि अमुक आदमी के मुंह से तो फूल झड़ते हैं, यह शायद पुराने ज़माने की बातें थीं। आज इन होंठों से कांटे बरस रहे हैं। जुबानें क़ौमों से क़ौमों को जुदा करने वाली बन गई हैं। क़लम गला काटवाने वाला बन गया है।

एक बार लखनऊ में एडीटर कांफ्रेंस थी और उसमें हमारी प्राइम मिनिस्टर भी आई थीं। उन्होंने उसका उद्घाटन किया था तो हमारे कुछ कांफ्रेंस वालों को नदवे में, जिसका मैं सेवक हूं, बुला लाये। उनमें अख़बारों के एडीटर साहिबान भी थे। उनमें मुसलमान भी थे, हमारे हिन्दु भाई भी थे। बड़ा अच्छा सम्मेलन था, मुझसे कहा गया कि मैं उनको एड्रेस करूं। मैंने उनसे कहा कि फ़ारसी का एक पुनाना शेर है जो ग़ज़ल के इश्क़ व महब्बत का शेर है जिसे किसी ने अपने प्रियतम के लिए कहा है, आज मैं आपके सामने पढ़ता हूँ–

आहिस्ता ख़राम बल्कि म ख़राम
जेरे क़दमत हज़ार जान अस्त

कहने वाले शायर ने अपने महबूब को सम्बोधित करते हुए कहा है कि तुम्हारे क़दम के नीचे हज़ार जानें हैं, आहिस्ता चलिएगा बल्कि न चलिए तो बेहतर है। और मैं आपसे कहता हूं कि "जेरे क़लमत हज़ार जान अस्त" कि आपके क़लम के नीचे हज़ार जानें हैं। महबूब के क़दम के नीचे हों न हों लेकिन हम गवाही देते हैं और दिन–रात तमाशा देखते हैं कि आपके क़लम के नीचे हज़ारों नहीं लाखों जानें हैं। बेचारे शायर की पहुंच तो हज़ार तक थी और एक आदमी से महब्बत करने वाले कितने लोग होंगे। लेकिन अख़बार वालों का खुदा भला करे। आज पत्रकारिता इतनी तरक्की कर गई है और इसके प्रभाव इतने बढ़ गये हैं कि लोग इसे 'मेजेस्टी' कहते हैं और यह बात सही भी है। जैसे किसी

ज़माने के बादशाहों को सम्बोधित किया करते थे। आजकल इसको हर मेजेस्टी कहना चाहिए। इसकी पहुंच कहां नहीं है। इस का कार्यक्षेत्र और प्रभाव क्षेत्र किसी बादशाह के इख़तियार से कम नहीं है। अगर यह क़लम कैंची बन जाये तो इतनी बड़ी, इतनी दूर तक असर करने वाली क्या दुन्या में कोई कैंची होगी?

मैंने उनसे कहा कि वह ज़माना गया, जब महबूब से कहते थे हुजूर आपके क़दमों के नीचे हज़ारों जानें हैं। आप न चलें तो अच्छा है और चलें तो बहुत ध्यान दे कर चलें कि कोई मारा न जाये। मैं आपसे कहता हूं एडीटर साहिबान से मैंने कहा कि ज़ेरे कलमत हज़ार जान अस्त– आपके क़लम के नीचे हज़ारों जानें हैं और आज दुन्या में क़लम नहीं कैंचियां काम कर रही हैं।

ऐसे अल्लाह के बन्दे हमारे देश में बहुत हुए हैं, जिन्होंने जोड़ने और दिलों को मिलाने के काम किये हैं। मैं बहुत दुन्या फिरा हुआ हूं। मैं दुन्या के बहुत दूर दूर हिस्सों में गया हूं और मैंने बहुत से मुल्क भी देखे हैं। लेकिन यह प्रेम की बांसुरी बजाने वाले, महब्बत की सुरीली आवाज़ सुनाने वाले, महब्बत के गीत गाने वाले हमारे मुल्क में जितने हुए, दूसरे मुल्कों में कम मिलते हैं। मैं थोड़ा सा इतिहास का विद्यार्थी भी हूं। मुझे इसका थोड़ा सा शौक़ भी है बल्कि एक तरह की हॉबी है लत जैसे होती है। मुझे इतिहास की लत है। मैंने इतिहास पढ़ा है और इतिहास हमें बताता है कि हमारे इस देश में ऐसे ख़ुदा के बन्दे बाहर से आये और यहां भी पैदा हुए, जिन्होंने वही काम किया जो सूई करती है। जैसा कि मैंने हज़रत महबूब इलाही की बात सुनाई। उनका नाम तो महबूब इलाही है लेकिन वह असल में इन्सान से महब्बत करने वाले थे। आप हमारे इन बुजुर्गों, सुफी, सन्तों के किस्से पढ़ें तो मालूम होगा कि महब्बत क्या चीज़ है और इन्सान की क्या इज़्ज़त उनकी नज़र में थी।

जारी.....

सय्यिदुना इब्राहीम अलै0.....

इन समस्त परीक्षाओं में अल्लाह तआला ने अपने खलील इब्राहीम को सफल किया और बड़े–बड़े पुरस्कार प्रदान किये, अल्लाह ने अपनी शक्ति से उनकी बांझ पत्नी सारा को भी सन्तान दी जिनका नाम इस्हाक़ था उनके बेटे याकूब हुए और उनकी संतान में बहुत से पैगम्बर हुए, हज़रत इस्हाक़ ने शाम में बैतुल मक़दिस बनाया, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे इस्माईल की मदद से मक्के में ख़ुदा का घर काबा बनाया, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की सन्तान में हमारे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, हम सब उनकी उम्मत में हैं, हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बनाए हुए काबे के गिर्द मस्जिदे हराम है, तमाम मुसलमान जिन को अल्लाह तौफ़ीक देता है हज करने मक्का जाते हैं और काबे का तवाफ़ करते हैं, जिसका विस्तृत बयान पिछले अंक में आ चुका है।

❖❖❖

हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का ख़्वाब

—हिन्दी इमलाः राशिदा नूरी

ख़्वाब इक देखा ख़लीलुल्लाह ने
था दिखाया ख़्वाब वह अल्लाह ने

ज़ब्ह़ बेटे को हैं अपने कर रहे
ज़ब्ह रब के हुक्म से हैं कर रहे

समझे ग़ैबी है इशारा ये मुझे
''ज़ब्ह कर बेटा'' इशारा है मुझे

बोले बेटे से कि देखा ख़्वाब है
क्या बताऊँ कैसा देखा ख़्वाब है

ज़ब्ह़ तुझको कर रहा हूं ख़्वाब में
चाहता क्या रब है मुझ से ख़्वाब में

मेरे बेटे राय अपनी तू बता
क्या करूँ इस ख़्वाब पर अब तू बता

बोला बेटा दिल के इतमीनान से
और कहा यूं क़ूवते ईमान से

ज़ब्ह़ मुझको मेरे अब्बा कीजिए
हुक्म रब है इसको पूरा कीजिए

शाकिरो साबिर ही पायेंगे मुझे
और मुतीअ़े रब ही पायेंगे मुझे

अलगरज़ पहुंचे मिना दोनों बुजुर्ग
रब के वह महबूब हम सबके बुजुर्ग

आँखों पे पट्टी वह अपनी बाँध कर
और लिटाया बेटे को वाँ ख़ाक पर

चल रही थी अब छुरी हलक़ूम पर
अपने प्यारे बेटे के हल्क़ूम पर

तब निदा आई कि ऐ प्यारे मेरे
ख़्वाब को सच्चा किया प्यारे मेरे

हुक्मे रब से पहुंचे फिर जिब्रील वाँ
गोस्फन्द जन्नत से ले जिब्रील वां

जगह पर बेटे की था अब गोस्फन्द
हुक्मे रब है ज़ब्ह ये हो गोस्फ़न्द

आँखों से पट्टी जो खोली आप ने
ज़ब्ह पाया गोस्फन्द वां आप ने

बेटे को सालिम जो देखा आप ने
रब का अपने मन्शा समझा आप ने

जान लेना बेटे की मक़सद न था
इम्तिहां था और कुछ मक़सद न था

इम्तिहां में मेरे तू फाइज़ हुआ
तू मेरा है दोस्त ये साबित हुआ

यूं फिरिश्तों पर भी ये ज़ाहिर हुआ
ख़ल्क़ में इन्सान है सबसे बढ़ा

अहले सरवत जो भी इस उम्मत में हैं
हुक्म उन को है कि कुर्बानी करें

जारी हो सुन्नत खलीलुल्लाह की
है हिदायत यह रसूलुल्लाह की

रहमतें या रब रसूलुल्लाह पर
रहमतें या रब खलीलुल्लाह पर

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

हिज्री सन् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत से मनसूब है।
ہجری سن نبی ﷺ کی ہجرت سے منسوب ہے۔
हिज्री सन् के महीनों को हिज्री महीने कहते हैं।
ہجری سن کے مہینوں کو ہجری مہینے کہتے ہیں۔
हिज्री सन् के महीनों को अ़रबी महीने भी कहते हैं।
ہجری سن کے مہینوں کو عربی مہینے بھی کہتے ہیں۔
हिज्री सन् के महीनों को चाँद के महीने भी कहते हैं।
ہجری سن کے مہینوں کو چاند کے مہینے بھی کہتے ہیں۔
चाँद के महीने कभी 29 दिन के होते हैं तो कभी 30 दिन के।
چاند کے مہینے کبھی ۲۹ دن کے ہوتے ہیں تو کبھی ۳۰ دن کے۔
जब चाँद 29 तारीख़ को दिख जाता है तो महीना 29 दिन का रहता है।
جب چاند ۲۹ تاریخ کو دکھ جاتا ہے تو مہینہ ۲۹ دن کا رہتا ہے۔
आ़म तौर से साल के 6 महीने 29 दिन के होते हैं।
عام طور سے سال کے چھ مہینے ۲۹ دن کے ہوتے ہیں۔
चाँद के बारह महीनों के नाम इस तरह हैं।
چاند کے بارہ مہینوں کے نام اس طرح ہیں۔
मुहर्रम, सफर, रबीउल अव्वल, रबी उ़स्सानी, जुमादल ऊला, जुमादल उख़रा
محرم، صفر، ربیع الاول، ربیع السانی، جمادالاولی، جمادالاخری،
रजब, शआ़बान (शाबान) रमज़ान, शव्वाल, ज़ीक़आ़दा (ज़ीक़ाआ़दा), ज़ील्हिज्जः
رجب، شعبان، رمضان، شوال، ذی القعدہ، ذی الحجہ۔